

अंक: 25

मई-अगस्त,
2020

टीएचडीसी

पहल

राजभाषा

गृह-पत्रिका



टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED



हिंदी दिवस के शुभवसर पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की अपील



हिंदी दिवस के पावन अवसर पर टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं !

भारत के संविधान में 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। तब से प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस का आयोजन कर हम इस संकल्प को दोहराते हैं कि हम सांविधिक और व्यावहारिक दृष्टि से हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग कर निज भाषा का उत्तरोत्तर विकास करेंगे। वास्तव में हिंदी हमारे राष्ट्र की अस्मिता की पहचान है और देश की एकता की मजबूत कड़ी के रूप में लगातार महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने निज भाषा पर अपने इस दोहे के माध्यम से बिल्कुल सटीक बात कही है –

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।

बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल ॥

विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार ।

सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार ॥

अर्थात् अपनी भाषा से ही उन्नति संभव है क्योंकि यही सारी उन्नतियों का मूलाधार है। अपनी भाषा के ज्ञान के बिना हृदय की पीड़ा का निवारण नहीं हो सकता। विविध प्रकार की कलाएं, असीमित शिक्षा तथा अनेक प्रकार के ज्ञान सभी देशों से अवश्य ही लेने चाहिए परन्तु उनका प्रचार-प्रसार अपनी मातृभाषा में ही करना चाहिए।

निगम ने राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भारत सरकार की प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना की नीति का अनुसरण करते हुए अनेक प्रतिमान स्थापित किए हैं। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप समय-समय पर निगम ने राष्ट्रीय स्तर के अनेक पुरस्कार प्राप्त किए हैं। गत वर्ष भी 14 सितंबर, 2019 को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को वर्ष 2018-19 के दौरान राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए “राजभाषा कीर्ति पुरस्कार” सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की श्रेणी के अंतर्गत “क” क्षेत्र में द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। यह निगम की बड़ी उपलब्धियों में से एक है और इसके पीछे निगम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के राजभाषा हिंदी के प्रति किए गए समर्पित एवं संयुक्त प्रयास निहित हैं।

दिनांक : 14 सितंबर, 2020

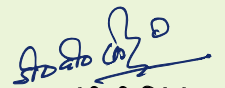
परन्तु हमें इतने से ही अपने कर्तव्यों की इतिश्री नहीं समझनी चाहिए तथा हिंदी भाषा के उत्तरोत्तर विकास, उत्थान एवं प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी के प्रति अपने प्रेम की रस-धारा का प्रवाह अनवरत रूप से जारी रखना चाहिए। हम सब अपने संगठित, ईमानदार एवं निष्ठापूर्ण प्रयासों से निगम का संपूर्ण कार्य हिंदी में करने का भरसक प्रयास करेंगे। यह निगम के साथ-साथ राष्ट्र के प्रति भी सच्ची कर्तव्यपरायणता होगी। सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की क्षेणी के अंतर्गत “क” क्षेत्र में स्थित होने के कारण इस दिशा में हम सभी की अधिक जिम्मेदारी है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी सितंबर माह में हिंदी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा/माह आदि कार्यक्रम उत्साह के साथ मनाने के निर्देश दिए हैं। हालांकि, यह भी निर्देश दिए गए हैं कि कोविड-19 महामारी के परिप्रेक्ष्य में केंद्र सरकार के द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों, मानक प्रचालन प्रक्रिया (एस.ओ.पी.) को ध्यान में रखते हुए इस दौरान आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों को यथासंभव ऑन-लाइन तरीके से आयोजित किया जाए। अतः उक्त दिशा-निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए निगम के अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी दिवस एवं राजभाषा हिंदी से संबंधित अन्य कार्यक्रमों में अधिक से अधिक संख्या में प्रतिभागिता करें एवं निगम में राजभाषा हिंदी के प्रति उत्साहजनक वातावरण सृजित करने में अपना योगदान दें।

आइए, हिंदी दिवस के अवसर पर हम यह संकल्प लें कि राजभाषा हिंदी के संबंध में, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने का सतत प्रयास करेंगे तथा अपने-अपने कार्य में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाते हुए राजभाषा कार्यान्वयन में अपनी ओर से गति प्रदान करेंगे। हम सभी के सतत प्रयासों से ही हम हिंदी के गौरवशाली इतिहास को पुनः प्राप्त कर पाएंगे।

एक बार पुनः आप सभी को हिंदी दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं।

जय हिंद !


(डी.वी.सिंह)

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

निदेशक (कार्मिक) की कलम से



प्रिय साथियों,

जैसा कि विदित ही है कि कोविड-19 का प्रकोप अभी भी जारी है। संक्रमित मरीजों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। इन विकट परिस्थितियों में स्वयं एवं अपने परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य का ख्याल रखते हुए अपने-अपने क्षेत्र के कार्य भी निरंतर जारी रखने की आवश्यकता है और मुझे यह कहते हुए हर्ष है कि निगम के अधिकारी एवं कर्मचारी पूरे मनोयोग से अपने-अपने कार्यों में जुटे हैं। हम भारत के लोग बहुत जुझारू प्रकृति के हैं। हमने पूर्व में भी अनेक आपदाओं का सामना किया है तथा इनसे उबरकर पुनः देश की अर्थव्यवस्था को नए आयाम देने में योगदान दिया है।

इस आपदा की स्थिति में पूरे विश्व ने पश्चिमी सभ्यता से किनारा करते हुए पुरातन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता, खान-पान, प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग को अपनाया, जिसके प्रभाव से विश्व इस महामारी से धीरे-धीरे मुक्त हो रहा है। यह हमारे लिए बहुत गौरव की बात है कि एक बार फिर विश्व को ऐसे संकट से निकालने में मदद करने में भारतवर्ष का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

वर्तमान परिस्थितियों में आधुनिक संचार प्रणाली ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है जिसका प्रयोग कार्यालय के कार्यों से संबंधित बैठकों एवं कार्यक्रमों का आयोजन करने, स्कूल, कॉलेजों एवं अन्य शैक्षणिक संस्थानों में ऑन-लाइन कक्षाओं के संचालन में बहुतायत से किया जा रहा है। आधुनिक संचार प्रणाली समय की मांग भी है जिसने चुनौती को अवसर में परिवर्तित कर दिया है।

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का एक अंग हिंदी भाषा भी है जिसे संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया है। निगम में राजभाषा का बेहतर कार्यान्वयन इसमें आधुनिक संचार प्रणाली एवं प्रौद्योगिकी का समावेश करके किया जा सकता है। कोई भी भाषा तभी समर्थ एवं सक्षम भाषा बन सकती है जब उसमें कार्य करने की पर्याप्त सुविधाएं मौजूद हों। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा इस ओर पर्याप्त कदम उठाए गए हैं। तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दावलियों का विकास हुआ है और कम्प्यूटरों में हिंदी में कार्य करना सुगम हो गया है।

अंत में मैं आप सभी को 14 सितंबर को आयोजित किए जाने वाले हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं और अपेक्षा करता हूं कि अपने समस्त सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु अपने प्रयास निरंतर जारी रखेंगे।

धन्यवाद !

विजय गोयल

विजय गोयल
निदेशक(कार्मिक)

संपादकीय



हिंदी गृह पत्रिका "पहल" का 25वां अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। पिछले अंक को दृष्टिगत रखते हुए आपके द्वारा जो फीडबैक दिए गए, हम उनका सम्मान करते हैं और उनका कार्यान्वयन "पहल" पत्रिका के भावी अंकों के प्रकाशन में करने की भरसक कोशिश करेंगे। यह बहुत हर्ष का विषय है कि पिछले कुछ समय से हमें काफी मात्रा में प्रकाशन हेतु सामग्री प्राप्त हो रही है और निगम के सम्मानित अधिकारी एवं कर्मचारी इस पत्रिका में व्यक्तिगत रूप से रूचि ले रहे हैं जिससे निगम में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन को बल मिला है।

साहित्य में भारतीय चेतना का सबसे अधिक प्रतिनिधित्व हिंदी ही करती है। दूसरी भाषाओं के साहित्य का परिचय भी हिंदी भाषा के माध्यम से ही सर्वाधिक संभव हो पाया है। यह बड़ा कारण है कि विश्वभर में हिंदी का अध्ययन आज वे लोग कर रहे हैं जो हिंदी भाषी या भारतीय मूल के नहीं हैं। इससे आज की परिस्थिति में हिंदी की अंतरराष्ट्रीय बिरादरी विकसित हो रही है।

विश्वभर में हिंदी की बढ़ रही लोकप्रियता को देखते हुए प्रत्येक देशवासी का यह कर्तव्य हो जाता है कि अपने देश में इस भाषा को पूरी तरह स्थापित करने के लिए पूरा प्रयास करे। राजभाषा विभाग ने हिंदी पत्रिकाओं के लिए नए निर्देश जारी किए हैं जिनके अनुसार संस्थानों के द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिकाओं की पीडीएफ की लिंक राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर इस प्रकार अपलोड की जाए कि इसे डाउनलोड कर पढ़ा जा सके। जिससे अब यह पत्रिका इंटरनेट पर हिंदी की सामग्री में वृद्धि करने में भी सहायक सिद्ध होगी और इसके माध्यम से इसके लेखकों एवं रचनाकारों के लेखन को वैश्विक स्तर पर पढ़ा जा सकेगा। राजभाषा विभाग के द्वारा की गई यह पहल इस पत्रिका को और भी अधिक लोकप्रिय बनाने में मददगार साबित होगी।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप इसी प्रकार अपने लेखों एवं रचनाओं को भेजना जारी रखेंगे और हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयासों के इस यज्ञ में अपनी ओर से आहुतियां देते रहेंगे। इसके साथ ही मैं एक बार पुनः इस पत्रिका में योगदान देने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त करता हूँ और इस पत्रिका के अनवरत प्रकाशन की कामना करता हूँ।

धन्यवाद !

पंकज

पंकज कुमार शर्मा
वरि. हिंदी अधिकारी

पहल

हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
की राजभाषा गृह पत्रिका (अंक-25)

मुख्य संरक्षक

श्री डी.वी.सिंह

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक

श्री विजय गोयल

निदेशक(कार्मिक)

मार्गदर्शक

श्री ईश्वर दत्त तिग्गा

उप महाप्रबंधक (कार्मिक-स्थापना/हिंदी)

संपादक

पंकज कुमार शर्मा

वरि. हिंदी अधिकारी

संपादन सहयोग

नरेश सिंह

कनि. अधिकारी (हिंदी)

मंजु तिवारी

उप अधिकारी (कार्यालय प्रशासन)

संपर्क सूत्र

संपादक

“पहल”

हिंदी अनुभाग, मुख्यालय

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड

भागीरथी भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड,

ऋषिकेश-249201, उत्तराखंड

दूरभाष : 0135-2473614

पहल पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। इनसे टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विषय सूची

लेख/तकनीकी लेख/प्रेरक प्रसंग	पृष्ठ सं.
1 मुस्कुराते रहें और हर पल जीयें	4
2 सोशल मीडिया: संवाद का विशिष्ट माध्यम	5
3 उदय योजना	7
4 पृथ्वी में कितना गहरा गड्ढा खोदा जा सकता है	10
5 सेफगार्ड ड्यूटी एवं डोमेस्टिक कंटेंट रिक्वायरमेंट	12
6 हमेशा परिस्थितियों को दोष देना	15
7 आध्यात्मिकता	16
8 सबको इससे गुजरना है	18
9 अकेलापन संसार में सबसे बड़ी सजा है	21
10 मामू ! अब तो रास्ता खुल गया	23
11 स्वास्थ्य परिचर्चा-कब्ज	25
12 हिंदी अनुभाग की ओर से	27
कविताएं	
13 वक्त/मां	30
14 पथिक	31
15 फूलों से रंग चुराया/कोई हुनर कहीं है मुझमें भी	32
16 कोरोना की महामारी/पेड़	33
17 गुस्ताखियां/मास्क मुआं	34
18 एक दिन ऐसा भी आएगा	35
राजभाषा गतिविधियां एवं कार्यक्रम	
19 हिंदी कार्यशाला का आयोजन	36
20 राजभाषा/हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन	37
21 टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता का आयोजन	38
22 समन्वयकर्ता सम्मेलन का आयोजन	38
23 नराकास, हरिद्वार की अर्धवार्षिक बैठक	39
24 हास परिहास	40

लेख

मुस्कुराते रहें और हर पल जीयें



प्रौद्योगिकी के इस युग में यूं तो हम सभी लोगों ने अनेक सेल्फियां/तस्वीरें खींची और देखी होंगी, लेकिन करीब साल भर पहले सोशल मीडिया पर महानायक श्री अमिताभ बच्चन द्वारा पोस्ट की गई सेल्फी को नामी गिरामी हस्तियों के द्वारा खूब सराहा गया।

कुछ लोगों ने इन बच्चों को ढूँढ़कर मिलने की इच्छा भी जाहिर की। इस सेल्फी को आपमें से भी कई लोगों ने सोशल मीडिया पर देखा होगा और खुद में अच्छी अनुभूति महसूस की होगी।

आखिर क्या अलग है, इस सरल सी तस्वीर में, जिसने हर किसी को मुस्कुराने पर मजबूर कर दिया, यह जानने की जब मैंने कोशिश की तो इन बिंदुओं को पाया :-

1. **कार्य को दिल और मन से करें** – सेल्फी की मुख्य विशेषता यह है कि सब बच्चों द्वारा उस पल का आनंद लिया जा रहा है, जब उनका मित्र यह तस्वीर ले रहा है। हर किसी के चहरे को देखकर यह कहा जा सकता है कि बच्चों का दिल और मन अपने मित्र के कैमरे (चप्पल) में है।
2. **उपलब्ध संसाधनों के साथ जीना सीखें** – समृद्धि

– राहुल जोशी, उप प्रबंधक(ओएमएस), ऋषिकेश

का वास मन में होता है, यह कहना गलत नहीं होगा कि हमारे पास जो भी और जैसे भी संसाधन होते हैं, वे एक सामान्य और सुखी जीवन जीने के लिए पर्याप्त होते हैं। सेल्फी में इस्तेमाल किया गया कैमरा (चप्पल) बच्चों के चहरे में इतनी मासूम सी मुस्कराहट ले आया जो आज के 5जी के युग में ट्रिपल कैमरा, ड्यूल फ्लेश जैसा कैमरा शायद न ला पाए।

3. **वर्तमान में रहें** – भूतकाल को भुला देने से और भविष्य की चिंता न करने से ही आप वर्तमान में रह सकते हैं। सेल्फी में मौजूद बच्चों के भूतकाल के कुछ खट्टे अनुभव और वर्तमान की चाह तो जरूर होगी, परंतु उन्होंने वर्तमान में रहकर और अपना पूर्ण ध्यान कैमरे (चप्पल) में देकर तस्वीर की मनोरमता में चार चांद लगा दिए हैं।

हम यह जरूर सोचें कि अगर इस एक तस्वीर से इतना कुछ महसूस कर सकते हैं तो हमारे आस-पास होने वाले छोटे-छोटे कार्यों से हम कितना कुछ उन्नत सीख सकते हैं।

मन में तो और भी विचार आ रहे हैं किन्तु पहली बार किसी पत्रिका के लिए लेख लिख रहा हूँ, इसलिए विचारों को शब्दों में उतारना थोड़ा मुश्किल हो रहा है।

यह भी हो सकता है कि मेरे द्वारा लिखे गए विचारों के अलावा आपके मन में और भी कई प्रकार की कल्पनाएं आ रही होंगी, लेकिन इस तस्वीर को देखकर इस विचार से सभी जरूर सहमत होंगे कि **“मुस्कुराते रहें और हर पल जीयें”**

लेख

सोशल मीडिया - सोशल डिस्टेंसिंग के दौर में संवाद का विशिष्ट माध्यम

- डॉ. ए.एन. त्रिपाठी, उप महाप्रबंधक (जनसंपर्क), ऋषिकेश
- गौरव कुमार, सोशल मीडिया अधिकारी, ऋषिकेश

माननीय प्रधानमंत्री जी ने जब रात आठ बजे राष्ट्र के नाम संबोधन में हम सभी को कोविड-19 संकट की तीव्र संक्रामकता के बारे में बताते हुए "जनता कर्फ्यू" की घोषणा की, तो वक्त बताने वाली घड़ियों के साथ ही हमारे शरीर की जैविक घड़ी भी मानो ठहर सी गई। बाद में यह जनता कर्फ्यू व्यापक जनहित में 21 दिनों के देशव्यापी लॉकडाउन में बदल गया जिसे 03 मई तक बढ़ा दिया गया। डीडी नेशनल पर राष्ट्र के नाम अपने संबोधन और ऑल इंडिया रेडियो (एआईआर) पर मन की बात, दोनों जगह उन्होंने कोविड -19 के इस खतरे से लड़ने के साथ ही बेहतर और स्वस्थ कल के लिए भी समझदारी भरे उपाय के रूप में "सोशल डिस्टेंसिंग" की जरूरत पर जोर दिया।

इंसान अपने सहज स्वभाव से ही सामाजिक है। शायद इसी बात को ध्यान में रखते हुए हमारे प्रधानमंत्री जी ने लोगों से यह आग्रह भी किया कि वे सोशल डिस्टेंसिंग उपायों का पालन करते हुए "भावनात्मक" और "मानवीय" दूरी न रखें। अब बड़ा सवाल यह उठता है कि सोशल डिस्टेंसिंग के दौरान मानवीय दूरी को कम कैसे करें? इसका एक जवाब सोशल

मीडिया के विवेकपूर्ण, अग्रसक्रिय यानि प्रोएक्टिव और उद्देश्यपूर्ण उपयोग में छुपा है। वैसे भी, इन दिनों सोशल मीडिया महज सूचना और मनोरंजन के एक माध्यम के बजाय परस्पर संवाद और मेलजोल के तरीके के रूप में अधिक उभरा है।

लोग फेसबुक पर "वर्क फ्रॉम होम" की अपनी तस्वीरें पोस्ट कर रहे हैं, प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष (पीएमएनआरएफ) में दान कर रहे हैं, ट्विटर पर #PMCARES ट्रेंड कर रहा है, लोग खाना बना रहे हैं और इंस्टाग्राम पर पोस्ट कर रहे हैं और सोशल मीडिया पर अपने करीबियों व प्रियजनों को "कुकिंग चैलेंज" दे रहे हैं, व्हाट्सएप पर लॉकडाउन के बारे में तरह-तरह के लतीफे चल रहे हैं और आखिरी और अहम बात, अंतहीन वेब सीरीजों ने भी दिखा दिया है कि भले ही हम एक-दूसरे को स्पर्श न कर रहे हों, फिर भी सोशल मीडिया के टूल्स ने हमें कैसे संपर्क में रखा है। फेसबुक और यूट्यूब लोगों के "थाली और ताली" बजाने के वीडियो से भर गए। ये तालियां और थालियां उन लोगों के प्रति अपनी एकजुटता और सम्मान जताने के लिए बजाई गईं, जो हम सभी को हमारे घरों में

सुरक्षित रखने के लिए अपने जीवन को जोखिम में डालकर काम कर रहे हैं। कोविड-19 वेब एप्लिकेशन भारत में रोग के मौजूदा मामलों की स्थिति दर्शाते हुए लोगों को बाहरी दुनिया से कम संपर्क के इस दौर में सूचनाओं से लैस रहने में मदद करती है। यूट्यूब और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म वर्कआउट वीडियो से सराबोर हैं और लोग एक-दूसरे को "फिटनेस चैलेंज" दे रहे हैं।



स्काइप, व्हाट्सएप और अन्य प्लेटफॉर्म पर परिजनों और दोस्तों का हाल-चाल जानने के लिए की जाने वाली वीडियो चैट/कॉल अचानक हमारे रोजाना के जीवन का सहज हिस्सा बन गई हैं। लोग प्रधानमंत्री राहत कोष और अन्य सरकारी कोषों में डिजिटल पेमेंट के जरिए योगदान दे रहे हैं और इसे सोशल मीडिया पर पोस्ट कर रहे हैं, ताकि दूसरों को भी प्रेरणा मिले। यह सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों के माध्यम से सामाजिक जुड़ाव की एक और दमकती मिसाल है।

माई जीओवी कोरोना हब आधिकारिक जानकारियों और फीडबैक का केंद्र बन गया है, जहां सब कुछ एक जगह उपलब्ध है। #IndiaFightsCorona सोशल मीडिया में ट्रेंड कर रहे हैशटैग्स में से एक है। माई जीओवी कोरोना हब ने अपने वेब पोर्टल पर आम लोगों के लिए एक ऑनलाइन प्रतियोगिता शुरू की, जिसके तहत उन्हें कोविड-19 के प्रसार से निपटने के उपाय और संभावित समाधान सुझाने थे। प्रतियोगिता में एक लाख रुपए के नकद पुरस्कार का प्रावधान भी था।

हममें से अधिकांश ने मोबाइल पर कॉल करते हुए उस कॉलर ट्यून को सुना ही है, जो कोविड-19 के प्रसार को रोकने वाले निवारक उपायों के बारे में बताती है। सरकार की यह इनोवेटिव और बहुत ही सामयिक पहल तालियों की हकदार है। यहां तक कि फेसबुक ने नवीनतम अपडेट्स के लिए कोरोनावायरस (कोविड-19) इन्फॉर्मेशन सेंटर भी शुरू किया है। आम लोगों के बीच



इन सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों की पहुंच, सुलभता और पहुंच को ध्यान में रखते हुए देखें, तो यह आइडिया लोगों को जानकारियों से लैस और अपडेट रखने में काफी योगदान दे सकता है। लोग व्यापक राष्ट्रीय हित की खातिर लागू इस लॉकडाउन प्रक्रिया के प्रति अपनी एकजुटता जताने के लिए "स्टे होम...स्टे सेफ" की समर्पित डिस्प्ले पिक्चर पोस्ट कर रहे हैं।

वर्तमान परिदृश्य में रेडियो भी संचार के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में उभरा है। माननीय प्रधानमंत्री ने देश के जाने-माने रेडियो एंकर्स के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग चैट के माध्यम से अपनी बैठक में कोविड-19 के प्रसार को रोकने के लिए उनसे रेडियो के जरिए जागरूकता फैलाने में अहम भूमिका निभाने का आग्रह किया है।

फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर और स्नैपचैट जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों की फौरन काम करने की प्रकृति ने हमारे लिए जुड़ाव बनाने और सूचनाएं साझा करने की एक नई राह निर्मित की है। आज हम कभी भी परस्पर संवाद व टिप्पणी करते हैं और कुछ भी साझा कर सकते हैं। इकोनॉमिक टाइम्स की एक हालिया मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, लॉकडाउन की शुरुआत के बाद से मोबाइल इंटरनेट का इस्तेमाल औसतन लगभग 10 प्रतिशत बढ़ गया। इस मामले में दिल्ली और मुंबई जैसे महानगरों में भले ही 3 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई, परंतु छोटे दूरसंचार सर्कल्स में 15 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

मौजूदा लॉकडाउन के कारण लोग घर पर रहने के लिए मजबूर हैं और इंटरनेट सर्फिंग संपर्क तथा जुड़ाव का एक असरदार तरीका बन चुकी है। इसी के साथ, जब बुजुर्ग, युवा और बच्चे एक साथ घर पर समय बिता रहे हैं, तो इस बात के काफी आसार हैं कि अभी तक सोशल मीडिया के इस्तेमाल के लिए ज्यादा इच्छुक न रहे लोग भी अब इसके बारे में जानेंगे, समझेंगे और इसका प्रयोग करेंगे।



लेख

उदय (UDAY) योजना - विद्युत क्षेत्र के सुधार में एक बड़ा कदम

- भुवनेश सिंह,

वरि. अभियंता (ताप-परिकल्प),
एनसीआर कार्यालय, कौशांबी

भारतीय विद्युत क्षेत्र के सामने प्रमुख चुनौतियों में से एक वितरण कंपनियों (DISCOMS) के वित्तीय स्वास्थ्य से संबंधित है। वित्तीय वर्ष 2014-15 (मार्च, 2015) के अंत में डिस्कॉम्स में लगभग 3.8 लाख करोड़ रुपए का वित्तीय घाटा तथा लगभग 4.3 लाख करोड़ रुपए का बकाया ऋण था। डिस्कॉम की खराब वित्तीय क्षमता के कारण बिजली की कमी, 100 प्रतिशत विद्युतीकरण प्राप्त करने में असमर्थता और बिजली उत्पादन बढ़ाने में असमर्थता जैसे दुष्प्रभावों से भारतीय विद्युत क्षेत्र जूझ रहा था। उक्त कारणों से भारत सरकार द्वारा वर्ष 2015 में एक नई योजना लाई गई, जिसका नाम था, 'उदय' (UDAY & Ujwal DISCOM Assurance Yojana)।

उदय (UDAY) योजना क्या है ?

- » 05 नवंबर, 2015 को भारत सरकार के विद्युत मंत्रालय (Ministry of Power) द्वारा उज्ज्वल डिस्कॉम्स एश्योरेंस योजना या 'उदय' प्रारंभ की गई।
- » उदय को डिस्कॉम्स की वित्तीय तथा परिचालन क्षमता में सुधार लाने के लिए शुरू किया गया था।
- » इस योजना में ब्याज भार, विद्युत लागत और कुल तकनीकी तथा वाणिज्यिक (Aggregate Technical and Commercial & AT&C) को कम करने का प्रावधान किया गया ताकि डिस्कॉम्स लगातार 24 घंटे पर्याप्त तथा विश्वसनीय विद्युत की आपूर्ति में समर्थ हों।
- » उदय योजना के निम्नलिखित मुख्यतः चार उद्देश्य हैं :-



1. बिजली वितरण कंपनियों के परिचालन की क्षमता में सुधार।
 2. बिजली की लागत में कमी।
 3. वितरण कंपनियों की ब्याज लागत में कमी।
 4. नवीकरणीय ऊर्जा का विकास।
- » उदय योजना के लागू होने के बाद डिस्कॉम्स को नए सिरे से कर्ज मिलना शुरू होगा जिससे वे अपनी ट्रांसमिशन व वितरण की हानि को कम करने के लिए नई योजना बना सकेंगे।
 - » बेहतर स्थिति होने के बाद वे ज्यादा बिजली खरीदेंगे जिससे बिजली की कटौती नहीं होगी। डिस्कॉम्स को सीधे तौर पर फायदा होगा और अनिश्चितता में फंसी नई बिजली कंपनियों पर काम आगे बढ़ सकेगा।
 - » उदय योजना अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मुख्यतः दो-स्तरीय रणनीति का उपयोग करती है। पहला, डिस्कॉम के ऋण बोझ का 75 प्रतिशत

हिस्सा उनके संबंधित राज्य को ट्रांसफर कर दिया जाएगा तथा राज्य की सरकारी कंपनियों के बकाया ऋण का भुगतान राज्य सरकार करेगी। राज्य सरकारें इसे चुकाने के लिए बांड जारी कर सकती हैं। बाकी का 25 प्रतिशत ऋण का हिस्सा डिस्कॉम्स को बॉन्ड जारी कर खुद वहन करना होता है। इस तरह से बिजली उत्पादक कंपनियों (GENCO) तथा वित्तीय संस्थानों के डिस्कॉम्स पर बकाया भुगतान एवं ऋण चुकाया जा सकेगा। UDAY का दूसरा लक्ष्य है, AT&C नुकसान को कम करते हुए वित्त वर्ष 2019 के अंत तक 15 प्रतिशत तक लाना और मौद्रिक नुकसान या औसत आपूर्ति लागत (ACS) और औसत राजस्व प्राप्ति (ARR) के अंतराल को वित्त वर्ष 2019 तक समाप्त करना। इसके अलावा भी डिस्कॉम्स को कई और मापदंडों पर खरा उतरना होगा और बताए गए लक्ष्यों को निर्धारित समयावधि तक पूरा करना होगा।

उदय (UDAY) योजना कितनी सफल रही— वर्तमान स्थिति :-

- यह योजना केंद्र सरकार द्वारा वर्ष 2015 में बिजली क्षेत्र में सुधार के लिए लाई गई अभी तक की सबसे बड़ी योजना थी जो कि राज्यों को लागू करने के लिए पूर्णतः वैकल्पिक थी। इसके बावजूद, इस योजना को अब तक 28 राज्यों और 04 केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा लागू कर दिया गया है। झारखण्ड पहला राज्य है जिसने उदय (UDAY) योजना को लागू किया था।
- राज्यों द्वारा उदय योजना के लागू करने तथा इसकी निगरानी के लिए केंद्र सरकार ने उदय पोर्टल भी बनाया है, जिसमें उदय योजना के तहत दिए गए मापदंडों को राज्यों द्वारा लागू करना तथा उनकी वर्तमान स्थिति राज्यों को अपडेट करनी होती है तथा उसके परिणामों के आधार पर तिमाही

तौर पर राज्यों को श्रेणीबद्ध किया जाता है।

- नवंबर, 2015 में उदय योजना लागू होने के बाद वित्तीय वर्ष 2016 में डिस्कॉम्स का घाटा 51,562 करोड़ रुपए था, जबकि वित्तीय वर्ष 2018 में यह घाटा 15,132 करोड़ रुपए रह गया। लेकिन वित्तीय वर्ष 2019 के सितंबर महीने तक के आए आंकड़ों के अनुसार यह 28,036 करोड़ रुपए हो गया।
- उदय पोर्टल के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2020 के अंत तक AT&C घाटा 18.9 प्रतिशत हो गया है, जो कि वित्तीय वर्ष 2016 के अंत में 20.7 प्रतिशत था। इसके अलावा, वित्तीय वर्ष 2020 के अंत तक औसत आपूर्ति लागत (ACS) और औसत राजस्व प्राप्ति (ARR) का अंतराल 0.42 रु. प्रति यूनिट हो गया है, जो कि वित्तीय वर्ष 2016 के अंत में 0.59 रु. प्रति यूनिट था। हालांकि, वित्तीय वर्ष 2018 के अंत में AT&C घाटा 18.7 प्रतिशत तथा ACS एवं ARR का अंतराल 0.17 रु. प्रति यूनिट तक पहुंच गया था।
- यह आंकड़ा प्रदर्शित करता है कि सभी राज्यों की डिस्कॉम्स अपनी औसत आपूर्ति लागत तथा औसत राजस्व प्राप्ति के अंतर को निर्धारित समय तक समाप्त करने में कुछ हद तक सफल रही हैं। इसके अलावा ये कंपनियां वित्तीय वर्ष 2019 के कुल तकनीकी तथा वाणिज्यिक (AT&C) नुकसान के लक्ष्य को 15 प्रतिशत से कम करने में भी पूर्णतः सफल नहीं रही हैं। हालांकि, असम, गुजरात, हरियाणा, महाराष्ट्र और राजस्थान में कुछ सुधार दर्ज किए गए हैं, क्योंकि इन राज्यों की डिस्कॉम के राजस्व में उदय योजना की वजह से बढ़ोत्तरी हुई, उनके राजस्व का औसत वित्त वर्ष 2018 में आपूर्ति लागत (नकारात्मक एसीएस-एआरआर अंतर) को पार कर गया।
- इस योजना का सकारात्मक पक्ष यह था कि देश के 28 राज्यों ने उदय योजना को लागू किया

लेकिन वित्तीय वर्ष 2019 में केवल 10 राज्यों ने इस घाटे में कमी की है अथवा लाभ प्राप्त किया है। इसके अलावा अन्य राज्य भी ACS और ARR अंतर को कम करने में सफल रहे हैं।

आगे की राह—

- उदय योजना कुछ हद तक डिस्कॉम्स की वित्तीय तथा परिचालन क्षमता में सुधार लाने में सफल रही। हालांकि इसमें जो कमियां रही, उनकी सरकार समीक्षा करके उनमें सुधार कर पुनः लागू करने की योजना बना रही रही है।
- हाल ही में केंद्र सरकार ने 90,000 करोड़ रुपए का आर्थिक पैकेज विद्युत क्षेत्र की कंपनियों के सुधार के लिए जारी किया है, जिससे बिजली उत्पादक

कंपनियों (GENCO) तथा वित्तीय संस्थानों का डिस्कॉम्स पर बकाया भुगतान एवं ऋण चुकाने में मदद मिलेगी।

- इसके अलावा, केंद्र सरकार ने अप्रैल, 2020 में ड्राफ्ट इलेक्ट्रिसिटी (संशोधन) बिल, 2020 जारी किया है, जिसमें पुराने इलेक्ट्रिसिटी एक्ट में कई ढांचागत बदलाव किए गए हैं जिसमें डिस्कॉम्स की वित्तीय तथा परिचालन क्षमता में सुधार लाना, राज्य सरकारों द्वारा बिजली सब्सिडी को डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर के माध्यम से उपभोक्ता तक सीधे देना, प्रीपेड मीटर लगाना, इत्यादि जैसे कई बदलाव प्रस्तावित है।



पृथ्वी में अधिकतम कितना गहरा गड्ढा खोदा जा सकता है

— आल्हा सिंह

उप महाप्रबंधक (प्रभारी बांध), वीपीएचईपी, पीपलकोटी



भौगोलिक रूप से हम जानते हैं कि अमेरिका पृथ्वी पर भारत के बिल्कुल पीछे स्थित है। जब भारत में दिन होता है तब वहां पर रात होती है तथा जब यहां रात होती है तब वहां पर दिन होता है। अभी हम भारत से अमेरिका वायुमार्ग या

जलमार्ग से आधे विश्व का चक्कर लगाकर जाते हैं। क्या हम पृथ्वी में आर-पार एक सुरंग बनाकर अमेरिका पहुंच सकते हैं? आओ इस पर विचार करें —

इस प्रश्न के उत्तर के लिए हमें पहले पृथ्वी की आंतरिक संरचना समझनी होगी।

पृथ्वी को मुख्य रूप से तीन भागों में बांट सकते हैं। ये भाग हैं क्रस्ट (भू-पटल), मेंटल (भू-प्रावार) और कोर (क्रोड)। इनका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है—

1. **क्रस्ट या भूपटल:**— इसके दो भाग हैं, ऊपरी सतह को सियाल जिसकी औसत मोटाई 11 किमी. और मुख्य अवयव सिलिका और एल्यूमीनियम हैं तथा दूसरी नीचे की सतह सीमा जो सियाल से 22 किमी. नीचे तक है और इसमें मुख्य अवयव सिलिका और मैग्नीशियम हैं। अतः कुल मिलाकर क्रस्ट (भू-पटल) की मोटाई 33 किमी. है। इसका औसत घनत्व 2.7 ग्राम प्रति घन सेमी. है। यह धरती का मात्र 0.5% भाग ही है। इसे ऊपर की

ठोस परत कहा जाता है।

2. **मेंटल या भू-प्रावार:**— क्रस्ट के नीचे मेंटल है जिसकी मोटाई 2865 किमी. है। इसके दो भाग हैं जो धरती के अंदर की डिस्कन्टीन्यूटी से अलग हो जाते हैं। यह ठोस पदार्थों से बनी है। इसका घनत्व 3.5 से 5.6 प्रति घन सेमी. है। इसका घनत्व 80 किमी. की गहराई पर बदलता है। इसमें पृथ्वी का 83% भाग है।

3. **कोर या क्रोड:**— इसके नीचे कोर है जिसकी मोटाई 3474 किमी. है। पृथ्वी की त्रिज्या इन तीनों भागों की मोटाई को जोड़ने पर 6371 किमी. हो जाती है और व्यास इससे दो गुना अधिक। कोर के तीन भाग हैं। बाहरी कोर, मध्य का हिस्सा, और अंदरूनी भाग। यह पृथ्वी का केंद्रीय भाग है और इसका निर्माण निकिल और लोहे जैसे भारी तत्वों से हुआ है। इसका औसत घनत्व 13 ग्राम प्रति घन सेमी. है तथा भूमि के कुल भाग का लगभग 16.5% है। इस भाग का तापमान 6000°C तक है। पृथ्वी की ध्रुवों पर व्यास 12714 किमी. तथा भू-मध्य रेखा पर व्यास 12756 किमी. है। भू-मध्य रेखा पर व्यास ध्रुवों के व्यास से 42 किमी. अधिक है। इसलिए धरती गोलाकार न होकर चपटी है।

पृथ्वी में ड्रिलिंग के प्रयास

1. **कोला सुपरडीप बोर होल रूस सोवियत यूनियन:**— पृथ्वी में ड्रिलिंग के बहुत बार प्रयास किए गए हैं और अभी तक अधिकतम गहराई में रूस के वैज्ञानिक 12262 मी. तक खोद सके थे और

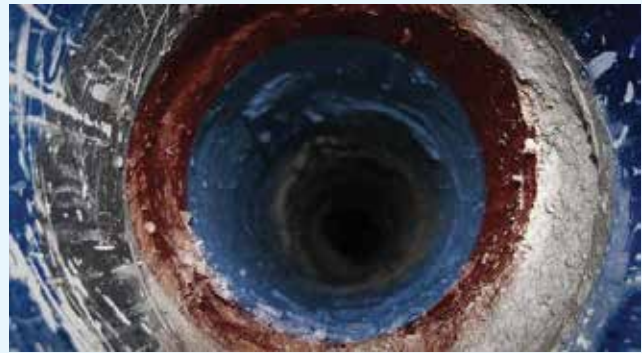
इस सुपरडीप बोर होल SG-3 का व्यास 9" (23 सेमी.) था। ड्रिलिंग की शुरूआत 25 मई, 1970 में की गई। 1992 में 12289 मी. तक इस गहराई पर जाकर ड्रिलिंग बंद करनी पड़ी। यह ड्रिल इंटरनेशनल कॉन्टिनेंटल साइंटिफिक ड्रिलिंग प्रोग्राम के अंतर्गत की गई थी। इस परियोजना का कार्य 1995 में सोवियत संघ के विघटन के कारण बंद हो गया था। इस गहराई पर तापमान 350 डिग्री फार्नहाइट/(180°C) हो गया था। इसको कोला सुपर डीप बोर होल कहा गया है। इसे नरक का द्वार भी कहते हैं। इस होल को ड्रिल करने में उरालमाश 4 और उरालमाश 15000 ड्रिल ऋग का प्रयोग किया गया। यह स्थान कोला पेनिनसुला सोवियत यूनियन के पेंचस्क्री जिले में है। यह अब तक का सबसे गहरा कृतिम छेद है। इस गड्ढे से आश्चर्यजनक आवाजें भी आ रही थी जिसको रिकार्ड किया गया तथा इस गहराई पर पानी भी मिला है। 2008 में इस परियोजना को बंद कर होल सील कर दिया गया है। इस परियोजना का लक्ष्य 15000 मी. की गहराई तक ड्रिल करना था।

2. **जर्मन कॉन्टिनेंटल डीप ड्रिलिंग प्रोग्राम:**— जर्मन कॉन्टिनेंटल डीप ड्रिलिंग प्रोग्राम (KTB सुपर डीप बोर होल) के अंतर्गत 1987-1995 में जमीन के 9.1 किमी. नीचे तक जर्मनी के वावरिया स्थान पर ड्रिलिंग की गई है। इस गहराई पर तापमान 260°C या 509°F था। यहां पर भी यंत्रों के खराब होने की समस्या का सामना करना पड़ा।
3. **प्रोजेक्ट मोन्डे:**— प्रशांत महासागर के फर्श में अमेरिकन प्रोजेक्ट मोन्डे के अंतर्गत 1958 में डीप ड्रिल प्रोग्राम शुरू किया गया। पृथ्वी के मध्य भाग भू-प्रावार के अध्ययन हेतु परियोजना चालू की गई। 1966 में इस परियोजना पर धनाभाव में काम बंद कर दिया गया। समुद्र के नीचे भू-पटल की मोटाई मेंटल भू-प्रावार तक लगभग 06 किमी. ही

है, जबकि अन्य जगह पर अधिक होती है। अतः सागर की तलहटी में बोर किया गया।

इसके अलावा जापान आदि ने भी प्रयास किए हैं लेकिन अधिकतम ऊर्ध्वाधर गहराई कोला सुपरडीप बोर होल की है। इससे अधिक गहराई में कोई भी होल ड्रिल नहीं किया जा सका है।

खुदाई/ड्रिलिंग में बाधा का कारण:— जैसे-जैसे पृथ्वी में नीचे खुदाई करते हैं, पृथ्वी के तापमान में वृद्धि होती है। अनुमानतः 32 मीटर धरती की सतह से नीचे जाने पर तापमान एक डिग्री सेंटीग्रेड बढ़ जाता है। जमीन में नीचे खोदते जाने पर धीरे-धीरे इसका तापमान बढ़ता जाता है और एक गहराई में तापमान इतना अधिक हो जाता है कि खुदाई में प्रयुक्त यंत्र खराब हो जाते हैं। अतः तापमान की अधिकता और पृथ्वी की सघनता ही भूमि के व्यास के आर-पार की खुदाई में सबसे बड़ी बाधा है।



भविष्य में कुछ अच्छी प्रक्रिया-विधि का उपयोग कर कुछ बेहतर यंत्र बनाकर नीचे ड्रिलिंग कर सकने में सफलता मिल सकती है। लेकिन फिर भी 12756 किमी. तक खोदना वर्तमान परिस्थितियों में असंभव ही लग रहा है। अभी तक पृथ्वी के व्यास का लगभग 0.1% ही ड्रिलिंग की जा सकी है। अतः व्यास पर पृथ्वी के आर-पार खोदते हुये भारत से अमेरिका नहीं पहुंचा जा सकता है।



लेख

सेफगार्ड ड्यूटी एवं डोमेस्टिक कंटेंट रिक्वायरमेंट - सोलर उद्योग पर इसका प्रभाव एवं वर्तमान स्थिति

— विशालाक्षी मालान

उप प्रबंधक (व्यवसाय विकास प्रकोष्ठ), एनसीआर कौशांबी

जुलाई, 2018 में डायरेक्टरेट जनरल ऑफ ट्रेड रेमेडीज (DGTR) ने चीन और मलेशिया से आयातित सेल और मॉड्यूल पर सुरक्षा शुल्क (सेफगार्ड ड्यूटी) को लागू करने का निर्णय लिया जिसका मुख्य उद्देश्य घरेलू सेल और मॉड्यूल निर्माताओं की सुरक्षा करना था।

पहले वर्ष के लिए 25 प्रतिशत सुरक्षा शुल्क लगाया गया था, जिसका पालन दूसरे वर्ष में चरणबद्ध तरीके से किया जाना था। दूसरे वर्ष के पहले छह महीनों में निर्यातकों द्वारा भारत में 20 प्रतिशत का सुरक्षा शुल्क देय था और दूसरे वर्ष के उत्तरार्ध में 15 प्रतिशत का भुगतान देय था।

सोलर उद्योग पर प्रभाव— प्रारंभ में सुरक्षित शुल्क लगाने के बाद घरेलू सौर मॉड्यूल की मांग में काफी बढ़ोतरी हुई। इससे पहले चीनी मॉड्यूल निर्माता बड़े पैमाने पर उपयोगिता परियोजनाओं के साथ-साथ वितरित सौर परियोजनाओं के लिए घरेलू आपूर्तिकर्ताओं को तीव्र प्रतिस्पर्धा दे रहे थे। हालांकि, अब स्थिति फिर से बदलती हुई दिख रही है।

घरेलू सौर मॉड्यूल निर्माताओं ने सेफगार्ड ड्यूटी लगाए जाने के महीनों बाद असंतोष व्यक्त किया है। उनका कहना है कि सुरक्षा शुल्क की नीति अपने वांछित उद्देश्यों को प्राप्त करने में विफल रही है क्योंकि यह नीति केवल दो साल के लिए लागू की गयी है और उपयोगिता पैमाने की सौर परियोजनाओं की कार्यान्वयन अवधि ही 18 से 24 महीने की है।

स्थानीय निर्माताओं के लिए सरकार की संरक्षणवादी नीतियों से लागत बढ़ रही है— भारत में केवल 16



सोलर सेल निर्माता हैं। 16 निर्माताओं में से केवल नौ की विनिर्माण क्षमता 100 मेगावाट या उससे अधिक है। इन सेल निर्माताओं में से अधिकांश के पास मॉड्यूल निर्माण इकाइयाँ भी होती हैं जो अपने सेल उत्पादन का अधिकांश उपयोग कर लेती हैं। बड़े एकीकृत निर्माता अपने स्वयं के मॉड्यूल लाइनों के लिए अपनी सेल निर्माण क्षमता का उपयोग कर रहे हैं, जिससे घरेलू निर्मित सौर सेल की उपलब्धता में कमी आ गई है।

फरवरी, 2019 में डायरेक्टरेट जनरल ऑफ ट्रेड रेमेडीज (DGTR) ने मलेशिया से पांच साल के लिए टेम्पर्ड कोटिड और अंकोटिड ग्लास के आयात पर \$ 114.58/मीट्रिक टन का डंपिंग रोधी शुल्क लगाया। 2017 में वित्त मंत्रालय ने चीन से आयात किए गए टेम्पर्ड ग्लास (सोलर ग्लास) पर एंटी-डंपिंग शुल्क, 64.04 डॉलर प्रति मीट्रिक टन से 136.21 डॉलर/मीट्रिक टन तक की श्रेणी में लगाया। सूत्रों के मुताबिक, इससे ग्लास निर्माताओं के लिए एकाधिकार हो गया है एवं स्थानीय सौर निर्माताओं के लिए कच्चे माल की लागत में वृद्धि हुई है।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSMEs) क्षेत्र में सेफगार्ड ड्यूटी का प्रभाव— एमएसएमई के लिए सुरक्षा शुल्क की नीति एक बड़ी चुनौती रही है। चाहे वह सोलर पंप हो या रूफटॉप सोलर प्रोजेक्ट, वे केवल बड़े सोलर सेल निर्माताओं का पक्ष लेते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन प्रोजेक्ट्स के पात्रता मापदंड में बैंक गारंटी बहुत बड़ी है, कार्यशील पूंजी की आवश्यकता भी अधिक है। इसलिए, यह स्पष्ट है कि भाग लेने के लिए एमएसएमई को बड़ी राशि का निवेश करना पड़ता है जिसमें वो असक्षम हैं। यद्यपि सरकार घरेलू मॉड्यूल विनिर्माण को बढ़ावा देने का पुरजोर प्रयास कर रही है परंतु सुरक्षा शुल्कनीति, सोलर सेल्स को आयात करने से भारतीय निर्माताओं को प्रतिबंधित करती है। यदि एमएसएमई को इस दुष्प्रभाव से बचाना है तो सरकार को सरकारी निविदाओं में केवल सौर मॉड्यूल के लिए “मेक इन इंडिया” के क्लॉज को जारी रखते हुए स्थानीय सेल्स के “मेक इन इंडिया” क्लॉज को समाप्त करना होगा। साथ ही, घरेलू विनिर्माण को अनिवार्य बनाने वाली सरकारी निविदाओं में एमएसएमई के लिए 30 प्रतिशत आरक्षण के बारे में भी विचार करना होगा।

घरेलू सेल और मॉड्यूल निर्माताओं के लिए अतिरिक्त लागत— एमएनआरई (MNRE) ने सौर सेल्स और मॉड्यूलों का प्रमाणन अनिवार्य कर दिया है, जो सितंबर 2018 से लागू हो गया है। उद्योग के सूत्रों के अनुसार, भारतीय मानक ब्यूरो (BIS) की प्रमाणन लागत अत्यधिक है – प्रत्येक मॉड्यूल के लिए छह महीने और लगभग 4

मिलियन (\$ 57,000) लगते हैं। सौर पैनलों की प्रत्येक श्रृंखला के लिए परीक्षण शुल्क लगभग 2.4 मिलियन (\$ 32,000) है, जो पैनलों की पाँच से छह श्रृंखलाओं के लिए लगभग 15–20 मिलियन (\$ 200,000 ~ \$ 270,000) आता है। सौर सेल्स, मॉड्यूल और इनवर्टर के कई बड़े निर्माताओं ने चिंता व्यक्त की है कि यह लागत बहुत अधिक थी और प्रक्रिया भी लंबी है जिससे कंपनियों के लिए नए उत्पादों को लॉन्च करना मुश्किल हो गया है।

विशेष आर्थिक क्षेत्रों (Special Economic Zones) में विनिर्माण की स्थिति— SEZs में निर्माता घरेलू टैरिफ एरिया (DTA) इकाइयों की तुलना में सभी विशेषाधिकारों और निर्यात लाभों का आनंद लेते हैं। ये निर्यात शुल्क, जीएसटी एवं बिजली शुल्क का भुगतान नहीं करते हैं और अब सुरक्षा शुल्क भी नहीं दे रहे हैं परंतु फिर भी भारत में बेच रहे हैं। वहीं DTA इकाइयाँ GST, सुरक्षा शुल्क एवं सुरक्षा शुल्क पर भी GST का भुगतान करती हैं जिससे उनकी कार्यशील पूंजी अवरुद्ध हो जाती है। इससे असंतुलन पैदा हो गया है। मॉड्यूल की SEZ और डीटीए यूनिट की कीमतों के बीच का अंतर \$ 0.02/डब्ल्यू है।

किसे है लाभ— रूफटॉप प्रोजेक्ट डेवलपर्स और इंजीनियरिंग, खरीद, और निर्माण (ईपीसी) कंपनियों के अनुसार सुरक्षा शुल्क लगाने के बाद से गुणवत्ता वाले भारतीय मॉड्यूल, चीनी मॉड्यूल के समकक्ष मूल्य या उससे भी कम कीमत पर उपलब्ध है।

इन कंपनियों के अनुसार भारतीय मॉड्यूल न केवल लागत-प्रतिस्पर्धी बन गए हैं, बल्कि वितरित परियोजनाओं के लिए लॉजिस्टिक्स के दृष्टिकोण से भी अधिक आकर्षक हैं, जिन्हें कम अवधि की आवश्यकता होती है। हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि सब्सिडी नियमों के तहत घरेलू सामग्री की आवश्यकताओं के कारण आवासीय सौर बाजार में हमेशा घरेलू मॉड्यूल का वर्चस्व रहा है।



कहाँ सुधार की आवश्यकता है— घरेलू निर्माताओं को बढ़ावा देने के लिए तैयार की गयी नीतियाँ MSME को नुकसान पहुंचा रही हैं और उद्योग से मिले फीडबैक के अनुसार केवल कुछ बड़े निर्माताओं को ही इस नीति से लाभ पहुंचा है। सरकार को आयातित सौर सेल्स पर शुल्क कम करने और खरीद मानदंडों पर विचार करने की आवश्यकता है।

इसके अलावा, भारतीय नियामकों को भी सौर उत्पादों को प्रमाणित करने के लिए आने वाली लागत एवं प्रक्रियाओं पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता होगी। प्रशासनिक लागत को कवर करने के लिए एक छोटा सा शुल्क लिया जा सकता है परंतु एक बड़ी राशि उद्योग के लिए हानिकारक है। अगर बड़े निर्माताओं को प्रमाणपत्रों का निधिकरण करना मुश्किल हो रहा है तो एमएसएमई को निश्चित रूप से इन लागतों को पूरा करने में परेशानी होगी।

भारत को चरणबद्ध तरीके से पॉलीसिलिकॉन से मॉड्यूल तक के सौर विनिर्माण की पूर्ण मूल्य श्रृंखला पर ध्यान देने की आवश्यकता है। सरकार को एक रणनीतिक उद्योग के रूप में पीवी विनिर्माण मूल्य श्रृंखला को प्राथमिकता देने पर विचार करना चाहिए और “पूर्ण मूल्य श्रृंखला” की स्थानीय विनिर्माण क्षमता को 2024 तक प्रतिस्पर्धी कीमतों पर चालू करने का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए।

वर्तमान स्थिति— जुलाई, 2020 में डायरेक्टर जनरल ऑफ ट्रेड रेमेडीज (DGTR) ने एक मौखिक सुनवाई की, जहां घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय उद्योगों के प्रतिनिधियों ने भारत के लिए सौर सेल्स और मॉड्यूल के आयात पर सुरक्षा शुल्क (SGD) के निरंतर कार्यान्वयन के बारे में अपने अभ्यावेदन प्रस्तुत किए।

घरेलू उद्योग के प्रतिनिधियों ने कहा कि दो साल तक का सुरक्षा शुल्क पर्याप्त नहीं था और डीजीटीआर को 2024 तक ड्यूटी का विस्तार करना चाहिए। उन्होंने शुल्क को फिर से लागू करने की सिफारिश की, जो 15

प्रतिशत से शुरू होकर अगले चार साल तक सालाना 0.05 प्रतिशत की दर से कम होता जाएगा।

मलेशिया, इंडोनेशिया, चीन और ताइवान के प्रतिनिधियों ने अपनी समस्याओं को प्रस्तुत किया और भारत के साथ अन्य द्विपक्षीय समझौतों के साथ संभावित मुद्दों का हवाला देते हुए सुरक्षा शुल्क से बाहर रहने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि यदि यह पुनः लागू किया जाता है तो सरकार के प्रस्तावित 20 प्रतिशत मूल सीमा शुल्क (BCD) के अलावा सुरक्षा शुल्क अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मुद्दों को जन्म देगा।

इसके साथ ही, शापूरजी पल्लोनजी समूह के एक प्रतिनिधि ने रक्षा शुल्क के प्रावधान के तहत प्रतिपूर्ति के लिए दायर कई याचिकाओं का हवाला देते हुए कहा कि उद्योग को पहले ही सुरक्षा शुल्क का दुष्प्रभाव झेलना पड़ा है। उन्होंने तर्क दिया कि इसका बोझ अंततः विकासकर्ताओं और उपभोक्ताओं पर पड़ता है।

सारांश— यदि सुरक्षा शुल्क को फिर से लागू किया जाता है तो यह देश में सौर उपकरण आयातकों के लिए दोहरी मार होगी क्योंकि बिजली मंत्रालय के अनुसार अगस्त से सौर मॉड्यूल पर 20–25 प्रतिशत मूल सीमा शुल्क और सौर सेल्स पर 15–20 प्रतिशत मूल सीमा शुल्क लगाया जा सकता है। यदि मूल सीमा शुल्क, सुरक्षा शुल्क के अतिरिक्त लगाया जाता है तो सौर आयात पर कुल कर घटक 50 प्रतिशत के करीब आ सकता है।

अतः सुरक्षा शुल्क के संबंध में लिया गया यह निर्णय आगे आने वाले दिनों में भारत में सौर उद्योग का भविष्य निर्धारित करने में काफी महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।



लेख

हमेशा परिस्थितियों को दोष देना

— दिलीप कुमार द्विवेदी

प्रबंधक (कार्मिक-कल्याण), ऋषिकेश

हमारे बीच में आपको कई ऐसे लोग मिलेंगे जो कि हर कार्य की विफलता का ठीकरा परिस्थितियों पर फोड़ देते हैं। इसी को दृष्टांत रखते हुए एक प्रेरणादायक लघु कहानी प्रस्तुत है —

काफी समय पहले की बात है, एक आदमी रेगिस्तान में फंस गया था। वह मन ही मन अपने आपको बोल रहा था कि यह कितनी अच्छी और सुन्दर जगह है। अगर यहाँ पर पानी होता तो यहाँ पर कितने अच्छे — अच्छे पेड़ उग रहे होते और यहाँ पर कितने लोग घूमने आना चाहते होंगे। वह हवाई कल्पनाएँ करने लगा था कि यह होता तो वो होता और वो होता तो शायद ऐसा होता। उसकी ये कल्पनाएँ ऊपर वाला देख रहा था। अब उस इंसान ने सोचा, यहाँ पर पानी नहीं दिख रहा है लेकिन उसको थोड़ी देर में आगे जाने के बाद एक कुँआ दिखाई दिया जो कि पानी से लबालब भरा हुआ था। काफी देर तक वह खुद से विचार-विमर्श करता रहा।

फिर कुछ देर बाद उसको वहाँ पर एक रस्सी और बाल्टी दिखाई दी। इसके बाद कहीं से एक पर्ची उड़कर आई है, जिस पर्ची पर लिखा हुआ था कि तुमने कहा था कि यहाँ पर पानी का कोई स्रोत नहीं है। अब तुम्हारे पास पानी का स्रोत भी है। अगर तुम चाहो तो यहाँ पर पौधे लगा सकते हो किंतु वह बिना कुछ करे चला गया।

तो यह कहानी हमें क्या सिखाती है ? यह कहानी हमें यह सिखाती है कि अगर आप परिस्थितियों को दोष देते हो कि अगर यहाँ पर ऐसा हो और आपको वह सोर्सस मिल जाए तो क्या परिस्थिति को बदल सकते हो? इस कहानी में तो यही लगता है कि कुछ लोग सिर्फ



परिस्थिति को दोष देना जानते हैं। अगर उनके पास उपयुक्त साधन हों, तब भी वे परिस्थिति को नहीं बदल सकते, सिर्फ वह आरोप लगाना जानते हैं। लेकिन हमें ऐसा नहीं बनना है। दोस्तों, इस कहानी में यह शिक्षा मिलती है कि अगर आप चाहते हो कि परिस्थितियां बदले और आपको अगर उसके लिए उपयुक्त साधन मिल जाएं तो आप अपना एक परसेंट योगदान तो दे ही सकते हैं और जैसा कहा गया है कि बूँद — बूँद से सागर भरता है इसलिए मुझे पूरा भरोसा है कि अगर आपके साथ ऐसी कोई घटना घटती है तो आप अपना योगदान देकर उस मौके का सदुपयोग करेंगे।

हम सब यह जानते हैं कि हर विपत्ति में अवसर होता है, बस जरूरत है तो उसे आगे बढ़कर परखने की और उसे अवसर बनाकर भविष्य निर्माण करने की।



आध्यात्मिकता (Sprituality)



आजकल कोरोना महामारी की वजह से संपूर्ण देश में लॉकडाउन चल रहा है। सभी अपनी सुरक्षा हेतु अपने-अपने घरों के अन्दर हैं। ऐसे में व्हाट्सएप और फेसबुक पर निरंतर एक संदेश चल रहा है:— "if you can't go outside, go inside" वास्तव में जाने inside से तात्पर्य क्या है ? आइए चलिए इसे समझते हैं।

हम सभी कुछ न कुछ जानने का और कुछ न कुछ पाने का प्रयास तो करते ही रहते हैं पर बिना आध्यात्मिक मन के जो भी इस संसार से जानते हैं, वह बहुत ही आधा-अधूरा होता है और यही आधा-अधूरा जानना ही समस्त दुखों का कारण होता है। कुछ भी जान लें, फिर भी कुछ जानने को बच ही जाता है, कुछ भी हासिल कर लें, फिर भी कुछ हासिल करने को रह ही जाता है। आखिर ऐसा क्या है इस जगत में, जिसे जानने के बाद एवं उस जानने में स्थापित होने के बाद जानने को कुछ भी बचता ही नहीं है।

इस बात को जानने के लिए विषय है "अध्यात्म"। अध्यात्म का अर्थ भगवा धारण करना, रात-दिन भजन कीर्तन में लीन रहना, हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं पर जाकर साधना करना इत्यादि कतई नहीं है। यह तो

— श्रीमती अनुपमा गोविल

पत्नी श्री राजीव गोविल अपर महाप्रबंधक, टिहरी

मन और शरीर में शुद्धि के आत्मसात होने का मार्ग है। इसके लिए त्रियोग हैं:—

(1) हठ योग; (2) ज्ञान योग; (3) भक्ति योग

हठ योग— शरीर को स्वस्थ बनाने हेतु विभिन्न आसनों का अभ्यास।

ज्ञान योग— अनावश्यक विचारों और खयालों से मुक्त रहने का अभ्यास। जिसके लिए उच्चतम साहित्य का अध्ययन कारगर होता है।

भक्ति योग— शान्त शरीर + स्थिर मन से आत्मसात होने का प्रयास। जिसके लिए उच्च कोटि के संगीत, भजनों द्वारा प्रयास होता है।

अध्यात्म किसी उम्र विशेष में की जाने वाली प्रक्रिया नहीं है। मेरे दृष्टिकोण से तो हमारी शिक्षा प्रणाली के प्रारम्भिक स्तर से ही "अध्यात्म" को एक विषय के रूप में होना चाहिए ताकि एक बहुत ही सुंदर, सुदृढ़ और आनंदमयी समाज की स्थापना हो सके।

हम सभी के भीतर बुद्धि है। यह बुद्धि (मन) ही माया है। यह उपयोगी तो है साथ ही यह हमारे दुखों का कारण भी है। जब हम बुद्धि का उपयोग करते हैं तो यह उपयोगी है किन्तु जब बुद्धि हमारा उपयोग करने लगे तो यह घातक होती है।

आज से हजारों वर्ष पूर्व मनुष्य का जीवन बुद्धि से नहीं चलता था। वह अपनी मूलभूत जरूरतों को पूरा कर के आनंद से जीता था परन्तु आज समस्या यह हो गई है कि हम सभी बुद्धि में जीने लगे हैं। आज मनुष्य का जीवन मूलभूत जरूरतों तक सीमित नहीं है। यही उसके

समस्त कष्टों का कारण है। वह पूर्ण रूप से बुद्धि अर्थात् माया के शिकंजे में है।

यह बुद्धि आज जहां है, वहां आपको हाजिर होने ही नहीं देती। यह निरंतर भूत और भविष्य में विचरण करा-करा कर वर्तमान पल की खूबसूरती से वंचित रखती है। बुद्धि का ही काम है निरंतर इस ओर अग्रसर होना कि दूसरे क्या कर रहे हैं ? मैं क्या कर के स्वयं को दूसरों से ज्यादा योग्य दिखाऊँ। मेरे पास बड़ी कार हो, बड़ा बंगला हो, इसलिए नहीं कि ये मेरी जरूरत है, वरन इसलिए कि मैं दूसरों को प्रभावित कर सकूँ। जितने भी अंधविश्वास हैं वह सभी बुद्धि की ही देन हैं।

जीवन को आनंद से भरने के लिए अब बुद्धि के स्तर से ऊपर उठना होगा। बुद्धि हमें संचालित न करे वरन हम बुद्धि को संचालित करें, अन्यथा माया के चंगुल से अपने कष्टों से पार जाना संभव न होगा। बुद्धि से पार जाने के लिए आवश्यक है कि हम बाहर-बाहर जिस आनंद की खोज निरंतर करते रहते हैं उसकी खोज अपने भीतर ही करें। तीन चीजें हैं, जो सभी ढूँढ रहे हैं। चाहे इंसान हो या विज्ञान हो, वो तीन चीजें हैं—

सत्-चित-आनंद

सत् (अस्तित्व, existence)— इस जगत में कुछ भी नहीं टिकता। आज के सितारे कल गर्दिश के हो ही जाते हैं। यह जिज्ञासा करना कि आखिर ऐसा क्या है जो सदैव टिकता है। 'मैं कौन हूँ ?' अस्तित्व क्या है ? इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढना। यह कार्य विज्ञान भी कर रहा है। परन्तु यह विज्ञान से आगे अध्यात्म का विषय है।

चित (चेतना, Consciousness)— 'संपूर्ण जानना' समस्त अस्तित्व सम्बन्धी जिज्ञासाओं का पूर्ण होना। पूरा अस्तित्व है 'शिव' और इस अस्तित्व में जो भी घटित हो रहा है वह शिव की शक्ति (चेतना) से घटित हो रहा है। यह जानना ही 'परमज्ञान' है। चेतना विचारगत होती है और यह विचार इन्द्रियों द्वारा अथवा पूर्व की एकत्रित जानकारी पर निर्भर होते हैं। इस 'जानने' से

आगे निकल जाना ही 'समझ' है। यह समझ जाना कि इस पूरे खेल में 'मैं' (अहम **ego**) का कोई अस्तित्व नहीं है। पूर्ण मुक्ति प्रदान करती है।

आनन्द (Joy)— हर इंसान आनंद की खोज कर रहा है। यही हमारा मूलभूत स्वभाव है। पर हमारी बुद्धि का मूलभूत स्वभाव कुछ और है। बुद्धि तीन स्तरों पर कार्यरत होती है—

(1) तामसिक; (2) राजसिक; (3) सात्विक

एक पूर्ण मुक्त मन इन तीनों स्तरों से आगे निकलकर आनंद में स्थापित होता है। किंतु यह वाह्य जगत में संभव नहीं है। आनंद की खोज मन के भीतर ही की जा सकती है। भीतर जाकर करना यह है कि अस्तित्व में जो कुछ भी है, उसकी जांच-पड़ताल हो। जांच-पड़ताल से पता चलेगा कि यहां सब कुछ नष्ट हो ही जाता है परन्तु आखिरी बिंदु पर जो बचता है वापस देखने पर पता चलेगा कि समस्त नश्वरता में भी तो वही है। सब कुछ एक ही है यहां द्वैत जैसा कुछ भी नहीं है। यह समझने के बाद निरंतर 'मैं' 'मेरा' 'अहम' का शोर मचाने वाला मन पूर्ण रूप से शांत होकर आत्मा में स्थापित हो जाता है।

आत्मा से एकसार हुआ मन ही सच्चिदानन्द (सत्+चित=आनन्द) है। इस सारी प्रक्रिया को ही साधना कहते हैं और यह साधना जीवन के प्रतिपल की आहुति मांगती है।

अन्तर्मुखी है धीर जो, ब्रह्मात्म में संलग्न है।

बहिर्मुखी है मूढ़ जो, शब्दादि में संलग्न है।।

ब्रह्मात्म में संलग्न हो, आनन्द अक्षय आएगा।

शब्दादि में संलग्न हो, ना दुख से छूटा जाएगा।।

हर हर महादेव।

लेख

सबको इससे गुजरना है !

— आशुतोष कुमार आनन्द
प्रबंधक(कार्मिक-नीति), ऋषिकेश



आज जब सारी दुनिया कोरोना महामारी से लड़ रही है तो सबके मन मस्तिष्क में कई सवाल आ रहे हैं। हर इंसान आज इस महामारी से बचने के उपाय कर रहा है। कई नुस्खे आजमाए जा रहे हैं तथा कई सावधानियां बरती जा रही हैं। हर जगह इस पर चर्चाएं हो रही हैं, पर मुझे मेरे एक सहयोगी की बात दिल में लग गयी, उन्होंने एक दिन इस महामारी पर हो रहे चर्चे के दौरान यह कहा कि "साहब कितना भी कुछ कर लो पर सबको इस से गुजरना है"। बात वहीं आई गई हो गई, पर कुछ पल बाद मन बरबस उनकी उन बातों पर चला गया और कानों में उनकी वो बात गूंजती रही कि "साहब कितना भी कुछ कर लो पर सबको इससे गुजरना है"। मन ने सोचा कि क्या यह बात सिर्फ इस महामारी तक ही सीमित है कि सबको इससे गुजरना

है या जीवन में न जाने कितनी परिस्थितियां आती हैं जिनसे हर किसी को गुजरना पड़ता है। मन बरबस जीवन की विभिन्न अवस्थाओं और घटनाचक्रों के बारे में सोचने लगा।

हम पैदा होते हैं, शैशवावस्था गुजरती है, खेल-कूद, बेफिक्री, स्कूल, पढ़ाई-लिखाई, प्रतिस्पर्धा इन सबसे भी सबको गुजरना है। सुबह उठो, वजन से भी भारी बस्ता उठाओ और निकल चलो स्कूल की तरफ नारा लगाते "सब पढ़े-सब बढ़े"। स्कूल में कापियां भरो, होमवर्क करो, परीक्षा दो और अगली कक्षा में पुनः इन सब कार्यों की पुनरावृत्ति। चाहे अमीर हो या गरीब हो, किसी भी धर्म या जाति का हो, पर सबको इससे गुजरना है।

फिर स्कूल की यात्रा खत्म हुई। अच्छे नंबर मिले हों या

न मिले हों पर अब दूसरी परिस्थिति का सामना करना है। अच्छे कॉलेज, विश्वविद्यालय में आगे की पढ़ाई जारी रखनी है इसलिए अब कॉलेज में एडमिशन की तैयारी, कोचिंग क्लासेज के चक्कर, फॉर्म भरिये, इस शहर से उस शहर, इस कॉलेज, यूनिवर्सिटी से दूसरे कॉलेज, यूनिवर्सिटी में दाखिले के लिए एंट्रेंस टेस्ट दीजिये, कर्म और किस्मत ने साथ दिया तो प्रतिष्ठित संस्थान में दाखिला मिल ही जाएगा। फिर क्लासेज, लेक्चर, नोट्स, दोस्तों के साथ मस्ती, रैगिंग (अगर उससे सामना हुआ हो तो), फिर आगे के कैरियर की चिंता, इंजीनियरिंग करें, डॉक्टरी की तैयारी की जाए, वकालत या कुछ और। फिर वही उठा पटक, आगे निकलने की होड़, पीछे छूट न जाने की चिंता, परन्तु साहब सबको इससे गुजरना है, हम सब इन परिस्थितियों से गुजरे हैं।

खैर, जैसा जिसका प्रारब्ध, कोई न कोई जरिया जीवन यापन का हर इंसान ढूंढ ही लेता है। फिर सुबह- सुबह उठो, भागना शुरू करो, ऑफिस की तैयारी, ट्रैफिक जाम, प्रेजेंटेशन की चिंता, टारगेट पूरा करने की कोशिश, नौकरी बचाए रखने की जद्दोजहद, मूल्यांकन की चिंता, प्रमोशन का इंतजार। इतने में माँ-बाप का दबाव, बहु लाने का और हाथ पीले करने का। पशोपेश में फंसे हैं कि लव मैरेज करें या अरेंज मैरेज, अपने पसंद के लड़का या लड़की से शादी हो या माँ बाप की पसंद से, खैर इन परिस्थितियों से भी इंसान निकल जाता है और हाथ आखिर पीले हो ही जाते हैं, पर साहब सबको इससे गुजरना है।

शादी हुई, कुछ महीने या कुछ साल तक सब कुछ नया-नया, जैसे जीवन में बसंत ही बसंत और कोई मौसम इर्द-गिर्द नहीं, सुबह-सुबह पत्नी के हाथों का गरमा-गरम बना खाना, हर बात पर सच्ची या झूठी तारीफ कर देना, सिनेमा हॉल, शॉपिंग, देश-विदेश के मनोरम स्थानों का भ्रमण, ऐसा लगता है, जीवन के सारे शौक अभी पूरे कर लो, पता नहीं कल हो न हो। फिर अचानक, पता चलता है कि आप माँ या बाप

बनने वाले हैं, नई जिम्मेदारी, फिर तैयारी, डॉक्टर के यहाँ के चक्कर, ये टेस्ट वो टेस्ट, चिंता और चर्चा कि नार्मल डिलीवरी होगी या ऑपरेशन होगा, लड़का होगा या लड़की, नाम क्या रखेंगे, पता नहीं क्या-क्या आजकल लोग पहले ही सोच लेते हैं। फिर नियत समय के बाद वो दिन भी आता है, जब आपके घर कोई नन्हा कान्हा या नन्ही राधा आती है। फिर उनका टीकाकरण अभियान, परवरिश, देखभाल, शिक्षा, पढ़ाई, फिर वही पूरी कड़ी और घटनाओं की श्रृंखला जिनसे आप गुजरे, अब आप अपने बच्चे को उससे गुजारते हैं। तकरीबन सारी परिस्थितियां कमोवेश वैसी ही होती है, पर साहब सबको इससे भी गुजरना है।

फिर जिंदगी की हाफ सेंचुरी पूरी हुई, अब कमर में दर्द, यूरिक एसिड का बढ़ना, कोलेस्ट्रॉल (cholesterol) लेवल का ऊपर नीचे होना, आँखों से कम दिखना, हर महीने या दो महीने में अपना और जीवन संगिनी के ब्लड टेस्ट की चिंता, सुबह की मॉर्निंग वॉक और शाम का भ्रमण, मन में ये संकल्प लिए कि मैं स्वस्थ हूँ, मैं वृद्ध नहीं हो सकता, मेरे बाल उड़ नहीं सकते, अभी तो मैं जवान हूँ। फिर ऑफिस में थोड़ी पोजीशन ऊँची हुई, दो चार लोग अब साथ में अधीनस्थ काम करने लगे, उनके समक्ष अपने ज्ञान एवं अनुभव का प्रदर्शन, फिर यह भी चिंता कि बच्चे के भविष्य का क्या, उसका एडमिशन कहाँ होगा, उसके लिए फॉर्म भरना, अधीनस्थों से भी विभिन्न जानकारियां इक्ठ्ठी करवाना, फॉर्म भरवाना, बच्चों को समझाना कि उसके लिए क्या अच्छा, क्या बुरा और मन को अंदर ही अंदर यह भी समझाना कि आजकल की पीढ़ी है, सुनेगी भले ही सबकी, पर करेगी सिर्फ अपने मन की। खैर, यह भी समय गुजरता है, सारी परिस्थितियों का सामना करते हुए फिर जीवन रथ आगे बढ़ता है, पर साहब इन परिस्थितियों से गुजरना सबको है।

फिर अचानक याद आता है कि नौकरी से रिटायरमेंट में अब थोड़ा ही समय बचा है, घर, मकान बनाया या नहीं,

बच्चों की शादियाँ भी करनी है, कुछ अधूरे सपने अगर बचे हों तो उन्हें भी पूरा करना है, जीवन की आपाधापी में कितना खर्चा किया कितना बचा पाए, रिटायरमेंट के बाद घर गृहस्थी कैसे चलेगी, जो फिक्स्ड डिपॉजिट किया था, पीपीएफ, वीपीएफ में बचत की थी, उससे बुढ़ापा कट जाएगा अथवा नहीं, रिटायरमेंट के बाद मेडिकल की सुविधा का लाभ मिलेगा या नहीं या पॉलिसी बाजार डॉट कॉम से कहीं टर्म इंश्योरेंस प्लान तो नहीं लेना पड़ेगा। फिर यह भी चिंता कि कहीं दूसरों पर बोझ न बन जाएं, दूसरी इनिंग खेल पाऊँगा क्या, कहीं अन्य जगहों पर जुगाड़ हो जाएगा, आखिर इतने सालों में इतना सारा ज्ञान हासिल किया और संबंध बनाए हैं, कुछ तो काम आए, फिर वो दिन भी आता है, आपको माला पहनाई जाती है, आपके लिए अच्छी-अच्छी बातें कही जाती हैं, चाहे दिल से कही जाएं या महज होंठों से, फिर गाड़ी को धक्का लगाया जाता है और हो गयी एक लम्बी पारी का अंत। पता नहीं 60 साल की इस अनन्त यात्रा में कितनी सम और विषम परिस्थितियों से गुजरना पड़ा, पर मानो या न मानो साहब इन परिस्थितियों से गुजरना सबको पड़ता है।

रिटायर हुए, सोचा, अब थोड़ा सत्संग करेंगे, थोड़ा ईश्वर का ध्यान लगाएंगे, गंगा नहाएं और पुण्य कमाएं, क्योंकि ऐसा कहते हैं, यहाँ का कमाया यही रह जाता है, साथ अगर कुछ जाता है तो सिर्फ पुण्य और सत्कर्म। थोड़ा सँभलने की कोशिश कर ही रहा था कि अचानक टीवी पर समाचार आया कि चाइना से यूँ तो बहुत कुछ भारत आता है पर इस बार कोरोना वायरस भी आया है और जिनकी उम्र 60 साल से ज्यादा है, उनको विशेष ध्यान रखना है और बचा कर रहना है। तो भाई, अगले दिन से पतंजलि आयुर्वेद के उत्पादों की लिस्ट से चुन-चुन कर रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली दवाएं निकाली और आर्डर कर दिया, आयुर्वेद के घरेलू नुस्खों की भी लिस्ट बनाई, दोस्तों यारों ने कहा, गरम पानी पिया करो, हाथों को अल्कोहल युक्त सैनिटाईजर से धोओ और जब जुगाड़ हो जाए तो अल्कोहल से अंदर की मशीनरी को भी सैनिटाईजेशन करते रहो। मास्क खरीदे, प्राणायाम शुरू किया, लगा कि पूरी तैयारी हो गई है और अब कोरोना कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा कि तभी मेरे कानों में यह आवाज आई कि साहब इससे सबको गुजरना है। मन काँप गया। एक बार लगा, ऐसा कैसे हो सकता है। इतनी तैयारी के बाद मुझे तो

इससे नहीं गुजरना है, पर फिर थोड़ा गंभीर हुआ और सोचा जब जीवन की धूप-छाँव में उठापटक में इतनी परिस्थितियों से गुजरा तो इससे भी गुजरना पड़े तो क्या गुजर लेंगे, कहते हैं, मन को मजबूत करने से और पॉजिटिव सोचने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है फिर क्या, ताल ठोकी और बीवी से कहा, अरे सुनती हो चाहे कितना भी अनुलोम विलोम कर लो, काढ़ा पी लो, पर इससे सबको गुजरना है।



लेख

अकेलापन संसार में सबसे बड़ी सजा है !

— अवधेश चन्द्र गुप्ता

वरिष्ठ प्रबंधक(नियोजन एवं तकनीकी प्रकोष्ठ), कोटेश्वर



मेरी पत्नी ने कुछ दिन पहले घर की छत पर कुछ गमले रखवा दिए और एक छोटा सा गार्डन बना लिया। पिछले दिनों मैं छत पर गया तो यह देखकर हैरान रह गया कि कई गमलों में फूल खिल गए हैं, नींबू के पौधे में दो नींबू भी लटके हुए हैं और दो चार हरी मिर्च भी लटकी हुईं नजर आईं।

मैंने देखा कि पिछले हफ्ते उसने बांस का जो पौधा गमले में लगाया था, उस गमले को घसीट कर दूसरे गमले के पास कर रही थी। मैंने कहा, तुम इस भारी गमले को क्यों घसीट रही हो? पत्नी ने मुझसे कहा कि यहाँ यह बांस का पौधा सूख रहा है, इसे खिसकाकर इस पौधे के पास कर देते हैं। मैं हंस पड़ा और कहा

“अरे पौधा सूख रहा है तो खाद डालो, पानी डालो। इसे खिसकाकर किसी और पौधे के पास कर देने से क्या होगा?”

पत्नी ने मुस्कुराते हुए कहा “ये पौधा यहाँ अकेला है इसलिए मुरझा रहा है।

इसे इस पौधे के पास कर देंगे तो ये फिर लहलहा उठेगा। पौधे अकेले में सूख जाते हैं, लेकिन उन्हें अगर किसी और पौधे का साथ मिल जाए तो जी उठते हैं।” यह बहुत अजीब सी बात थी, एक-एक कर कई तस्वीरें आँखों के आगे बनती चली गयी। माँ की मौत के बाद पिताजी कैसे एक ही रात में बूढ़े, बहुत बूढ़े हो गये थे। हालांकि, माँ के जाने के बाद सोलह साल तक वो रहे,

लेकिन सूखते हुए पौधे की तरह। माँ के रहते हुए जिस पिताजी को मैंने कभी उदास नहीं देखा था, वे माँ के जाने के बाद खामोश से हो गये थे।

मुझे पत्नी के विश्वास पर पूरा विश्वास हो रहा था। लग रहा था कि सचमुच पौधे अकेले में सूख जाते होंगे।

बचपन में मैं एक बार बाजार से एक छोटी सी रंगीन मछली खरीद कर लाया था और उसे शीशे के जार में पानी भरकर रख दिया था। मछली सारा दिन गुमसुम रही। मैंने उसके लिए खाना भी डाला लेकिन वह चुपचाप इधर-उधर पानी में अनमना सा घूमती रही।

सारा खाना जार की तलहटी में जाकर बैठ गया, मछली ने कुछ नहीं खाया। दो दिनों तक वह ऐसे ही रही और एक सुबह मैंने देखा कि वह पानी की सतह पर उलटी पड़ी थी।

आज मुझे घर में पाली वह छोटी सी मछली याद आ रही थी। बचपन में किसी ने मुझे यह नहीं बताया था। अगर मालूम होता तो कम से कम दो, तीन या ढेर सारी मछलियाँ खरीद लाता और मेरी वो प्यारी मछली यूँ तन्हा न मर जाती।

बचपन में मेरी माँ ने सुना था कि लोग मकान बनवाते थे और रोशनी के लिए कमरे में दीपक रखने के लिए

दीवार में इसीलिए दो मोखे बनवाते थे क्योंकि माँ का कहना था कि बेचारा अकेला मोखा गुमसुम और उदास हो जाता है। मुझे लगता है कि संसार में किसी को अकेलापन पसंद नहीं।

आदमी हो या पौधा, हर किसी को किसी न किसी के साथ की जरूरत होती है। आप अपने आस-पास झांकिये, अगर कहीं कोई अकेला दिखे तो उसे अपना साथ दीजिए, उसे मुरझाने से बचाइए।

अगर आप अकेले हो तो आप भी किसी का साथ लीजिये, आप खुद को भी मुरझाने से रोकिये। अकेलापन संसार में सबसे बड़ी सजा है। गमले के पौधे को तो हाथ से खींचकर एक दूसरे के पौधे के पास किया जा सकता है, लेकिन आदमी को करीब लाने की जरूरत होती है। रिश्तों को समझने की, सहेजने की और समेटने की। अगर मन के किसी कोने में आपको लगे कि जिंदगी का रस सूख रहा है, जीवन मुरझा रहा है तो उस पर रिश्तों के प्यार का रस डालिए।

खुश रहिये और मुस्कुराइए। कोई यूँ ही किसी और की गलती से आपसे दूर हो गया है तो उसे अपने करीब लाने की कोशिश कीजिये।



श्रद्धांजलि

मामू ! अब तो रास्ता खुल गया !

— आर. पी. रतूडी

वरिष्ठ प्रबंधक (इलेक्ट्रॉनिक्स), सुरक्षा विभाग, खुर्जा



अभी पिछले साल की गर्मियों की ही बात है, भागीरथीपुरम में एक शाम ऑफिस से घर लौटते हुए पीछे से आवाज आई — 'और मामू, क्या हो रहा है'। मुड़कर देखा तो देवीलाल अपनी चिर-परिचित मुस्कान के साथ खड़ा था।

देवीलाल औसत कद, गोल-मटोल शरीर, चेहरे पर मोटा काला मस्सा लिए, होठों पर एक ट्रेडमार्क मुस्कान लिए हमेशा चहकता फिरता ही मिलता था। मामू देवीलाल का मानो तकिया कलाम था। पिछले ही साल अपनी बी.टेक. की डिग्री के लिए एआईसीटीई की परीक्षा पास करने के बाद देवीलाल बहुत उत्साहित था और अकसर कहा करता था — 'मामू अब तो रास्ता खुल गया, अब

कोई रोक नहीं पायेगा...'। एक सुनहरे भविष्य का सपना उसकी गोल-गोल चमकती आँखों में साफ दिखाई देता था, लेकिन होनी को कुछ और ही मंजूर था। एक दिन पता चला कि देवीलाल डेंगू हो जाने से गंभीर रूप से बीमार है। फिर जैसे-जैसे दिन बीतते गए, देवीलाल की हालत बिगड़ती ही चली गई। भागीरथीपुरम के अपने आवास में रोज सुबह बहुत ज्यादा आस्तिक न होते हुए भी भगवान के सामने मैंने कितने ही दिन देवीलाल के ठीक होने की दुआएं मांगी। भगवान से जब-जब मैं अपनी बीमार माँ के ठीक होने की दुआएं मांगता तब देवीलाल के लिए भी उतनी ही शिदत से दुआएं मांगता। लेकिन भगवान ने हमेशा की तरह मेरी दुआएं कबूल नहीं

की और एक दिन देवीलाल के असामयिक निधन की खबर आ गई। शायद भगवान को देवीलाल जैसे नेक और खुशदिल आदमी का इस कलयुगी दुनिया में रहना ठीक नहीं लगा इसलिए उसे अपने पास बुला लिया, देवीलाल भगवान को प्यारा हो गया।

यह एक कठोर सत्य है कि जिस भी जीव ने जन्म लिया है, एक दिन उसकी मृत्यु भी अवश्य ही होनी है, आज नहीं तो कल सभी को इस दुनिया से जाना ही जाना है, कोई भी अमर नहीं हो सकता। लेकिन प्रकृति या यूँ कहें कि ईश्वर ने मनुष्य की रचना इस भ्रम के साथ की है कि थोड़ी सी सफलता मिलते ही वो अपने अलावा सभी को तुच्छ समझने लगता है। ताकतवर व्यक्ति कमजोर पर जोर दिखाकर संतुष्टि महसूस करने लगता है। उसे यह बात समझ नहीं आती कि मुकाबला बराबरी वाले से होता है जिसमें वो जीत भी सकता है और हार भी सकता है जबकि अपने से कमजोर के साथ मुकाबले में तो उसी की जीत होनी तय है। लेकिन ताकतवर मनुष्य इसी जीत में सुख महसूस करता है, लेकिन ऐसी जीत खतरनाक होती है।

संत कबीरदास जी ने कहा भी है कि –

दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय

मुई खाल की स्वांस सो, सार भस्म हो जाये।

अर्थात् शक्तिशाली व्यक्ति को कभी अपने बल के मद में चूर होकर किसी दुर्बल पर अत्याचार नहीं करना चाहिए क्योंकि दुखी हृदय कि हाय बहुत ही हानिकारक होती है। जिस प्रकार मरे हुए जानवर की खाल से बनी धौंकनी निर्जीव होते हुए भी लोहे को भस्म करने की शक्ति रखती है ठीक उसी प्रकार दुखी व्यक्ति की बहुआओं से सर्वनाश हो जाता है।

हर मनुष्य के जीवनकाल में सर्वश्रेष्ठ दौर भी आता है और निकृष्ट दौर भी आता है। ईश्वर बहुत कम मनुष्यों को महान बनने का अवसर देता है लेकिन हर मनुष्य ईश्वर की उस कृपा को समझ नहीं पाता और अपने

अहम में महान बनने के उस अवसर को तुच्छ बनने में परिवर्तित कर देता है। इंसान से भगवान बनने का, भगवान से शैतान बनने का, दुआओं से बहुआओं तक का सफर पलक झपकने के जैसा होता है। जरूरतमंद को कुछ दे दो तो दुआ और भगा दो तो बहुआ। मांगने वाला तो पहले ही अपनी आत्मा को मारकर मांगने जाता है, लेकिन उसे मना कर देने वाला तो उससे भी पहले मर चुका होता है –

‘रहिमन वे नर मर चुके, जे कहूँ माँगन जाहि।
उनते पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहि ।।

देवीलाल सुनहरे भविष्य का सपना आँखों में संजोये असमय ही चला गया। दुःख तो होता है लेकिन मौत तो मौत है, रोज आती है, कई रूपों में आती है। कभी इंसान का विश्वास मरता है, कभी ईमान मरता है, कभी दोस्ती मरती है, कभी संबंध मरते हैं। देह की मौत तो मनुष्य कुछ समय में भूल जाता है लेकिन विश्वास, ईमान, दोस्ती और संबंधों की मौत मनुष्य को जीवन भर मारती रहती है।

आज देवीलाल की वही बात फिर से जेहन में गूँज रही है – ‘मामू अब तो रास्ता खुल गया...’। रास्ता खुला तो लेकिन कहीं और का, इहलोक से परलोक का। ईश्वर देवीलाल की आत्मा को शान्ति प्रदान करे और स्वर्ग में स्थान दे। देवीलाल अपने सद्व्यवहार और नेकनीयती के साथ अभी भी आस-पास ही मौजूद है क्योंकि –

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ।।

अर्थात् इस आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, आग जला नहीं सकती, जल गीला नहीं कर सकता और वायु सुखा नहीं सकती।



स्वास्थ्य

स्वास्थ्य परिचर्चा-कब्ज

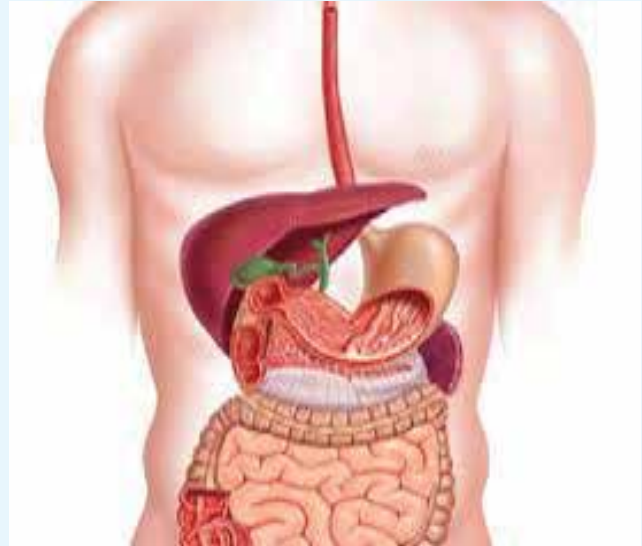
- हरीश चन्द्र उपाध्याय

वरि. प्रबंधक (भू-विज्ञान एवं भू-तकनीकी), ऋषिकेश

हम लोगों में किसी भी बीमारी का मुख्य कारण कब्ज होता है या यों कहा जाए कि 90% बीमारियों का मुख्य कारण कब्ज ही है। इस पृथ्वी पर केवल मनुष्य ही है जिसे कब्ज, दिल की बीमारी, थाइराइड, कैंसर इत्यादि बीमारियां होती हैं। आप देखें तो पशु पक्षियों को कभी भी सर्दी जुकाम या उक्त बीमारियों का सामना नहीं करना पड़ता है। इसका मुख्य कारण है, मनुष्य का समय पर न उठना, समय पर भोजन न करना एवं तनाव। पशु पक्षियों को देखें तो मौसम के आधार पर हमेशा भोर में उठ जाते हैं और अपनी-अपनी दिनचर्या में व्यस्त हो जाते हैं। हमें इस दुनिया को स्वस्थ रखना है तो सर्वप्रथम कब्ज को हटाना चाहिए। "कब्ज हटाओ अभियान" चलाना चाहिए क्योंकि कब्ज के कारण ही हमें दिल की बीमारी, थाइराइड शुगर, बुखार आदि बीमारियां होती हैं। अतः कब्ज सब रोगों की जननी है।

लक्षण:- कब्ज होने पर मनुष्य को मल त्यागने में जोर लगाना पड़ता है, मल सूखा आता है, पेट में गैस रहती है, पाइल्स की परेशानी रहती है, पैरों में दर्द रहता है। कभी-कभी जी मिचलाता है, उल्टी जैसा तथा चक्कर सा आता है, मुंह से बदबू आती है, कमर में दर्द हो सकता है, मुंह में छाले पड़ना, अवसाद, अम्ल का बढ़ना (एसिडिटी), खट्टी डकार आना, कमजोरी का अहसास होना, त्वचा पर फोड़े, फुंसी, पेट में भारीपन होना, पेट में गैस रहने के कारण कभी-कभी भयंकर सिर दर्द तथा कभी-कभी ऐसा लगता है जैसे हार्ट अटैक आ रहा हो। कब्ज होने पर बार-बार पखाना भी जाना पड़ सकता है। अकसर आंव की शिकायत हो जाती है और कभी-कभी खून भी आ जाता है।

कारण:- समय पर न उठना या सूर्योदय के बाद उठने वाले को हमेशा कब्ज की परेशानी रहती है क्योंकि यदि सूर्योदय तक अपने शौच आदि से निवृत्त हो जाएं तो हमें आक्सीजन अधिक लेने का समय मिल जाता है, जो आक्सीजन शरीर की हर क्रिया में काफी सहायक होती है और समय से हम नाश्ता (सुबह का भोजन) भी कर लेते हैं। देरी से उठने में हमारा नाश्ता भी देरी से होता है। समय पर भोजन न करना



तथा भोजन बिना पचे दूसरी बार भोजन ले लेना भी कब्ज का मुख्य कारण है। तले हुए एवं मिर्च मसालेदार भोजन लेना भी मुख्य कारण है। खाने को चबाकर ना खाना या तनाव में, चिंता, क्रोध में, निराशा में या जल्दबाजी में किया गया भोजन भी कब्ज पैदा करता है। चाय कॉफी, तम्बाकू तथा सिगरेट के सेवन से तो कब्ज होता ही है, रात को देर से खाना खाने तथा व्यायाम न करने से भी कब्ज होता है। साथ ही, रेशेदार आहार न लेना तथा पानी कम पीने से भी कब्ज हो जाता है।

किसी-किसी के शरीर की पाचन क्रिया जन्म से ही कमजोर होती है जो अकसर कब्ज को जन्म देती है। थाइराइड की बीमारी वाले को भी अकसर कब्ज रहता है तथा लगातार दर्द निवारक (पैन किलर) खाने से भी कब्ज बनता है। अधिक पकाया भोजन भी हमारे अनुकूल नहीं होता है। लगातार गरिष्ठ भोजन जैसे पूरी, पराठे, हलवा व कचौड़ी का सेवन करने से हमारी पेट की मशीनरी इसको पचा नहीं पाती यह आंतों के किनारे चिपक जाता है। जो कब्ज का कारण बन जाती है क्योंकि आंतों के दांत नहीं होते हैं। यहीं से धीरे-धीरे शरीर में नयी-नयी बीमारियां पैदा हो जाती हैं।

निवारणः— प्रातः काल सूर्योदय से पहले उठकर सवा लीटर गुनगुना पानी घूंट-घूंट कर पीना चाहिए। पानी बैठकर पीना लाभप्रद रहेगा। तदुपरांत दोनों हाथों को आपस में मिलाकर आसमान की तरफ देखना चाहिए एवं दोनों पैरों को पंजे के बल पर उठाना चाहिए। यह क्रिया पांच बार करनी चाहिए। शरीर उठाकर तीन बार दायें एवं तीन बार बायें झुकना चाहिए। एक हाथ कंधे पर, एक हाथ कमर पर रखकर पीछे की ओर देखना चाहिए। यह क्रिया भी तीन बार करनी चाहिए। इस बीच में आपका शौच का दबाव अवश्य बन जायेगा। अन्यथा थोड़ा पैदल चलकर एक हाथ से दूसरे हाथ को हथेली में पेट वाले बिंदु को ताली की तरह ठोकना चाहिए। यह क्रिया पैदल चलते हुए होगी। यदि तब भी न हो तो लोवर लिप (Lower Lip) के बीच पकड़ना चाहिए। यदि हम पेट साफ वाली क्रिया में सफल हो गए तो पूरा दिन हमारा अच्छा जाएगा। इसके साथ-साथ दैनिक जीवन में हमें निम्न का प्रयोग करना चाहिए। कृपया एक दिन में एक प्रयोग उचित होगा :-

- (1) पपीते का सेवन अधिक से अधिक करें।
- (2) अमरूद गोल करके काटकर खाना चाहिए एवं इसके बीजों को नहीं चबाना चाहिए।
- (3) सोते समय दूध में बादाम का तेल मिलाकर पीना चाहिए।
- (4) दूध में अरंडी का तेल मिलाकर पिया जा सकता है।
- (5) रात को दूध में मुनक्का उबाले एवं सोते समय गुनगुना दूध मुनक्के सहित पी लें।
- (6) दिन में संतरे के जूस का सेवन करना चाहिए।
- (7) रेशेदार आहार करना चाहिए।
- (8) अकसर गुनगुने पानी में नीबू डालकर पीना चाहिए।
- (9) ईसबगोल का सेवन कभी-कभी करना चाहिए।
- (10) व्यायाम करना लाभप्रद होगा।
- (11) अनार के जूस का तथा सेब का सेवन भी करना चाहिए।
- (12) रात को गाय के दूध में गाय का एक चम्मच घी डालकर पीने से भी फायदा होता है।
- (13) रात को पानी में गेहूं भिगा दें एवं सुबह खाली पेट उस पानी को पी लें।

- (14) सोंफ का काढा बनाकर उसमें एक चम्मच अरण्डी का तेल, काला नमक और थोड़ा नींबू डालकर पीना चाहिए।
- (15) चना एक किलो, जौ एक किलो तथा गेहूं दस किलो मिलाकर आटा बनाना चाहिए तथा दैनिक उपयोग में लाना चाहिए।
- (16) पंचगव्य का प्रयोग सर्वश्रेष्ठ है।
- (17) प्रातः काल एलोवेरा एवं आंवला मिलाकर जूस बनाकर पीना चाहिए।

भोजन को चबा-चबा कर खाना चाहिए जिससे लार अधिक मात्रा में बन सके। सब्जी, दाल अधिक मात्रा में तथा चावल और रोटी कम से कम खाना चाहिए। फलों का प्रयोग अधिक से अधिक करना चाहिए। एक जैसा अनाज, एक जैसा तेल तथा एक समान भोजन नहीं करना चाहिए। बदल-बदल कर खाना खाने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है। हरड़ का चूर्ण भोजन में प्रयोग करना उचित होगा। किसी ने हरड़ के लिए इस प्रकार कहा है:-

यस्य माता गृहे नास्ति तस्य माता हरीतकी।
कदाचित् कुप्यते माता, नोदरस्था हरीतकी ।।

लौकी की सब्जी तथा मूंग की दाल का सेवन अधिक से अधिक करना चाहिए। कोशिश करें कि गरिष्ठ भोजन एवं बाहर का खाना न खाया जाए। चाट, पकोड़े, मीठे व्यंजन तथा तली हुई तरकारियों से भी बचना हितकर होगा। बाजरे की रोटी का सेवन हितकर होगा। साथ में छाछ हो तो सोने पर सुहागा होगा। संतुलित एवं पूर्ण भोजन लेने की कोशिश करनी चाहिए। व्यायाम, प्राणायाम व खेलकूद को दिनचर्या में शामिल करना चाहिए। महीने में एक दो बार परिवार के साथ दिनचर्या से हटकर मनोरंजन का समय निकालना चाहिये। पंचतत्व से बने शरीर में हमें पांचों तत्वों को ध्यान में रखना चाहिए यानि शरीर में कितनी हवा चाहिए, जल चाहिए तथा मिट्टी (पृथ्वी) चाहिए। इन सब बातों का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है। अग्नि एवं वायु को हमेशा मिलाकर रखें यानि इस मुद्रा में हमारी दोनों अंगुलियां मिलती हैं और 10 मिनट तक इसका आनंद लें, अद्भुत शक्ति का आभास होगा।



हिंदी अनुभाग की ओर से.....

भारत सरकार की राजभाषा नीति और राजभाषा के प्रति हमारा दायित्व

राजभाषा नीति

संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार हिंदी संघ की राजभाषा है। अनुच्छेद 343(2) के अनुसार संविधान के लागू होने के 15 वर्षों की अवधि तक अर्थात् 25 जनवरी, 1965 तक संघ सरकार के कार्यों में अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने की व्यवस्था की गई थी। अनुच्छेद 343(3) में संसद को यह अधिकार दिया गया कि वह अधिनियम पारित करके 26 जनवरी, 1965 के बाद भी सरकारी कामकाज में अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने के बारे में व्यवस्था कर सके। तदनुसार इस शक्ति का प्रयोग करते हुए राजभाषा अधिनियम, 1965 पारित किया गया। जिसे 1967 में संशोधित किया गया। राजभाषा अधिनियम के अधीन राजभाषा नियम, 1976 में बनाए गए। राजभाषा अधिनियम पारित करने के साथ-साथ दिसंबर, 1967 में संसद के दोनों सदनों में भाषा नीति संबंधी संकल्प पारित किया गया। जिसे 18 जनवरी, 1968 को अधिसूचित किया गया था। इस संकल्प के पैरा-1 के अनुसार हिंदी के प्रसार तथा विकास और संघ के विभिन्न सरकारी प्रयोजनों के लिए इसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने हेतु प्रत्येक वर्ष गहन एवं विस्तृत कार्यक्रम तैयार करने और उसे कार्यान्वित करने का दायित्व केंद्र सरकार को सौंपा गया। इसके अनुपालन में राजभाषा विभाग द्वारा हर वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया जाता है जिसमें केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों द्वारा एक वर्ष में हिंदी में काम करने के लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं।

प्रमुख प्रावधान

राजभाषा अधिनियम और राजभाषा नियमों में हिंदी के प्रयोग के बारे में निम्नलिखित चार प्रमुख प्रावधान हैं—

1. राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) में उल्लिखित कागजात जैसे—सामान्य आदेश, अधिसूचनाएं, संकल्प, प्रेस विज्ञप्तियां, संविदाएं, करार, संसद के

समक्ष प्रस्तुत किए जाने वाले कागजात आदि द्विभाषी अर्थात् हिंदी और अंग्रेजी में जारी किए जाएं।

2. हिंदी राज्यों एवं उन राज्यों को जिन्होंने केंद्र सरकार के साथ हिंदी में पत्राचार करना स्वीकार कर लिया है, को भी मूल पत्रादि हिंदी में ही भेजे जाएं।
3. हिंदी राज्यों में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों के साथ पत्राचार में भी हिंदी का प्रयोग किया जाए।
4. कहीं से भी प्राप्त हिंदी पत्रों का उत्तर हिंदी में ही दिया जाए।

‘क’, ‘ख’ एवं ‘ग’ के क्षेत्र के राज्य/संघ शासित क्षेत्र

राजभाषा नीति के अनुपालन के विचार से राजभाषा नियम, 1976 में देश में ‘क’, ‘ख’ एवं ‘ग’ क्षेत्र बनाए गए हैं।

‘क’ क्षेत्र में बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड एवं दिल्ली और अंडमान निकोबार दीप समूह शामिल हैं।

‘ख’ क्षेत्र में गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब राज्य और चंडीगढ़ संघ शासित क्षेत्र शामिल हैं।

‘ग’ क्षेत्र में वे सभी राज्य एवं संघ शासित क्षेत्र आते हैं जो उपर्युक्त ‘क’ एवं ‘ख’ में शामिल नहीं हैं।

कुछ कार्य ऐसे हैं जिसके लिए राजभाषा अधिनियम और राजभाषा नियम के अनुसार शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में या द्विभाषी रूप में करने अपेक्षित है। इनमें राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का अनुपालन, हिंदी पत्रों का उत्तर हिंदी में देना तथा ‘क’ एवं ‘ख’ क्षेत्रों के कार्यालयों में ‘क’ एवं ‘ख’ क्षेत्रों की राज्य सरकारों तथा जनता के साथ हिंदी में पत्र व्यवहार करना, कार्यालयों के लिए आवश्यक उपकरण द्विभाषी ही खरीदना आदि शामिल है। वार्षिक कार्यक्रम में ‘क’, ‘ख’ एवं ‘ग’ तीनों क्षेत्रों के लिए अन्य मदों

जैसे केंद्र सरकार के कार्यालयों के साथ पत्राचार हिंदी में करना, कम्प्यूटरों में देवनागरी में टाइपिंग की सुविधा आदि कार्य निर्धारित परिमाण में करना अपेक्षित है।

राजभाषा का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए मंत्रालयों/विभागों में हुई कार्यान्वयन की प्रगति की जानकारी और समीक्षा, उनके द्वारा भेजी जाने वाली प्रगति रिपोर्टों के आधार पर राजभाषा विभाग द्वारा की जाती है। देश को विभिन्न भागों में वर्गीकृत करके राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों में जाकर हिंदी के कार्यालय की प्रगति की सीधी जानकारी भी प्राप्त की जाती है। राजभाषा विभाग के विशेष प्रयासों के परिणामस्वरूप विभिन्न बैंकों की अनेक शाखाओं में केवल हिंदी में कार्य करने की व्यवस्था की गई है।

राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के लिए आवश्यक है कि भारत सरकार के उच्चस्तरीय अधिकारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए अपने अधीनस्थ अधिकारियों और कर्मचारियों को प्रेरित करें और राजभाषा के गतिशील विकास में पूर्ण योगदान देकर देश को गौरवान्वित करें।

विस्तृत जानकारी तथा सुलभ संदर्भ के लिए राजभाषा विभाग के विभिन्न अनुदेशों का सारांश नीचे दिया जा रहा है। आइए! एक नजर हम अपनी जिम्मेदारियों पर डालें—

1. कहीं से भी प्राप्त हिंदी पत्रों का उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में ही दिया जाना चाहिए।
2. क्षेत्र 'क' अर्थात् उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और संघ शासित क्षेत्र दिल्ली तथा अंडमान निकोबार में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों से उस क्षेत्र के अन्य कार्यालयों और जनता को भेजे जाने वाले सभी पत्र हिंदी में होने चाहिए।
3. क्षेत्र 'ख' अर्थात् महाराष्ट्र, पंजाब, गुजरात, संघ शासित क्षेत्र चंडीगढ़ स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों तथा राज्य सरकार के कार्यालयों के साथ पत्र व्यवहार हिंदी में ही करना चाहिए।
4. क्षेत्र 'ख' की जनता के साथ पत्र व्यवहार हिंदी या

अंग्रेजी में किए जा सकते हैं।

5. क्षेत्र 'क' के कार्यालयों/व्यक्तियों को भेजे जाने वाले लिफाफों पर पता हिंदी में लिखा जाना चाहिए।
6. क्षेत्र 'ग' में स्थित कार्यालयों को 'क' एवं 'ख' क्षेत्रों के कार्यालयों/व्यक्तियों के साथ पत्राचार हिंदी में करने का प्रयास करना चाहिए।
7. क्षेत्र 'ग' ('क' और 'ख' के सिवाय अन्य राज्यों व संघशासित राज्य क्षेत्रों में सम्मिलित नहीं) में स्थित कार्यालयों से हिंदी में पत्राचार किया जा सकता है लेकिन आवश्यकता होने पर उस पत्र का अंग्रेजी रूपांतरण भी भेजा जा सकता है।
8. क्षेत्र 'ग' में स्थित ऐसे कार्यालयों के साथ पत्र व्यवहार हिंदी में किया जा सकता है जिनके 80 प्रतिशत कर्मचारी हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखते हैं।
9. पत्राचार के दौरान अंग्रेजी के जो शब्द हिंदी में मिल-जुल गए हैं, जैसे बैंक, टाइपिस्ट, टेलीफोन, रेल, पोस्ट-ऑफिस आदि शब्दों को ज्यों का त्यों देवनागरी लिपि में लिखा जा सकता है।
10. हिंदी पत्र व्यवहार में अंकों के अंतरराष्ट्रीय स्वरूप 1,2,3,4,5,6,7,8,9,0 का प्रयोग होना चाहिए।

हिंदी तथा अंग्रेजी का एक साथ प्रयोग

- » सभी प्रकार की सूचनाएं द्विभाषी जारी की जानी चाहिए।
- » प्रशासनिक कार्यालय में सभी परिपत्र, संकल्प, टेंडर नोटिस, करार आदि द्विभाषी जारी किए जाने चाहिए।
- » खबर की मोहरें द्विभाषी होनी चाहिए।
- » लिफाफे और पत्रों पर कार्यालय का नाम द्विभाषी होना चाहिए।
- » सभी साइन बोर्ड, नाम पट्ट, काउंटर बोर्ड द्विभाषी रूप में दर्शाए जाने चाहिए।
- » अहिंदी भाषी प्रदेश में साइन बोर्ड, नामपट्ट आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाने चाहिए। ऐसी स्थिति में भाषाओं का क्रम निम्नानुसार होगा —

- » पहली पंक्ति— प्रदेश की राजभाषा, दूसरी पंक्ति— हिंदी, तीसरी पंक्ति— अंग्रेजी
- » फाइलों, रजिस्ट्रों और फार्मों आदि की छपाई द्विभाषी होनी चाहिए ।
- » अधीनस्थ कार्यालय का नाम द्विभाषी रूप में दर्शाया जाए ।
- » संपूर्ण भारत में दिए जाने वाले विज्ञापन हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में एक ही तारीख को किए जाने चाहिए । हिंदी का विज्ञापन हिंदी समाचार पत्र में और अंग्रेजी का विज्ञापन अंग्रेजी समाचार पत्र में दिया जाना चाहिए ।
- » संस्थान के निमंत्रण पत्र द्विभाषी/त्रिभाषी रूप में छपवाने चाहिए ।
- » कार्यपालकों/अधिकारियों के विजिटिंग कार्ड द्विभाषी छपवाने चाहिए ।
- » संस्थान की सभी कारों में संस्थान का नाम पहले हिंदी में तथा बाद में अंग्रेजी में दिया जाना चाहिए ।
- » हिंदी भाषी क्षेत्रों में कर्मचारियों को दिए जाने वाले ज्ञापन, आरोप-पत्र आदि हिंदी और अंग्रेजी में दिए जाने चाहिए। अहिंदी भाषी क्षेत्र में भी यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि उसे हिंदी में दिया जाए तो उसकी तत्काल व्यवस्था की जानी चाहिए ।

अन्य दायित्व

- » प्रत्येक तिमाही समाप्त होने के 07 दिनों के भीतर हिंदी प्रगति की तिमाही रिपोर्ट संबंधित कार्यालय को भेज दी जानी चाहिए ।
- » राजभाषा से संबंधित अनुदेशों की अलग से एक फाइल रखी जानी चाहिए ।
- » हिंदी में प्राप्त और उत्तरित पत्रों और हिंदी में किए जा रहे सभी कार्यों का अलग से विधिवत रिकॉर्ड रखा जाना चाहिए ।
- » कार्यालय में हिंदी पत्रिकाएं/हिंदी समाचार पत्र मंगाए जाने चाहिए ।
- » सुनिश्चित करें कि उपस्थिति पंजिका में कर्मचारी अपना नाम हिंदी में लिखें तथा हस्ताक्षर हिंदी में

करें ।

- » हिंदी टाइपिंग/आशुलिपि में प्रशिक्षित कर्मचारियों से हिंदी में पूरा काम लिया जाना चाहिए ।
- » कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए अधिक से अधिक संख्या में अधिकारियों/कर्मचारियों को भेजा जाना चाहिए। कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद संबंधित कर्मचारी को अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित करना चाहिए ।
- » अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने में सहायता हेतु अधिक से अधिक संख्या में शब्दकोश एवं शब्दावलिियां तथा अन्य संदर्भ साहित्य उपलब्ध कराए जाने चाहिए ।
- » अधिकारियों/कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि जागृत करने एवं हिंदी का वातावरण बनाने के लिए अधिक से अधिक संख्या में हिंदी की अच्छी पुस्तकें मंगाई जानी चाहिए ।
- » अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रत्येक तिमाही हिंदी की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना चाहिए ।
- » हिंदी दिवस एवं हिंदी माह/हिंदी पखवाड़ा/हिंदी सप्ताह का आयोजन किया जाना चाहिए । जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन अपेक्षित है ।
- » हिंदी गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाना चाहिए जिनमें संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनाओं को प्राथमिकता दी जाए ।
- » कवि सम्मेलनों/गोष्ठियों के माध्यम से कर्मचारियों में हिंदी में कार्य करने की रुचि उत्पन्न की जाए ।
- » कार्यालय के कार्य में प्रयुक्त होने वाले कम्प्यूटरों में यूनिकोड में कार्य करने की सुविधा हो ।
- » राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमित अंतराल पर प्रत्येक तिमाही आयोजित की जाएं ।
- » नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकों में कार्यालय प्रमुख अपनी उपस्थिति अनिवार्य रूप से दर्ज करें ।



कविता

वक्त

धार वक्त की बड़ी प्रबल है
इसमें लय से बहा करो,
जीवन कितना क्षण भंगुर है
मिलते जुलते रहा करो।

यादों की भरपूर पोटली
क्षण भर में न बिखर जाए,
यारों से अनकही कहानी
तुम भी थोड़ी कहा करो।

हंसते चेहरों के पीछे भी
दर्द भरा हो सकता है,
यही सोच मन में रख करके
हाथ-हाथ में लिया करो।

सबके अपने-अपने दुःख हैं
अपनी-अपनी पीड़ा है,
अपने दोस्तों के संग थोड़े दुःख
मिल-जुल कर सहा करो।

किसका साथ कहां तक होगा
कौन भला कह सकता है,
मिलते कहने के नये बहाने
रचते बुनते रहा करो।

मिलने जुलने से कुछ यादें
फिर ताजा हो उठती हैं,
इसलिए मित्रों से यूं ही
मिलते जुलते रहा करो।

— बी. एल. रतूड़ी

उप अधिकारी (कार्मिक), भवन एवं सड़क, कोटेश्वर

कविता

माँ

मैं एक माँ हूँ,
कल तक सिर्फ,
एक बेटा, बहन या पत्नी थी,
आज मैं माँ हूँ।

जब आए तुम मेरे गर्भ में
मैं थोड़ा डरी थोड़ा घबराई थी,
बात पल दो पल की नहीं,
पूरे नौ माह की जो लड़ाई थी।

पूरी पहली तिमाही,
मैं कुछ समझ ही कहाँ पाई थी,
आशंकाओं से घिरे मेरे मन को,
नव जीवन से भेंट की उम्मीद ने विजय दिलाई थी।

दूसरी तिमाही तुम सबल हुए,
साकार, सक्रिय व प्रबल हुए,
तब आत्मबल मजबूत हुआ,
हृदय प्रफुल्लित प्रमुदित हुआ।

तीसरी तिमाही,
कुछ ऐसा हमारा रिश्ता बना,
मेरे शरीर का एक कोना,
तुम्हारा संपूर्ण क्रीडा क्षेत्र बना।

तुम आए हो जबसे दुनिया में,
जीवन-शैली परिवर्तित हो आई है
अब याद कहाँ ये आता है,
नव संरचना में पीड़ा भी उठाई है।

इससे पहले हे माँ,
मैं ये बात समझ कब पाई थी,
किस पीड़ा से तुम गुजरी होगी,
जब मैं दुनिया में आई थी।

— माधवी जोशी

प्रबंधक (ईएमडी), ऋषिकेश

कविता

पथिक

मैं चलता हूँ एक पथ पर,
कभी पर्वतों से घबराता हूँ,
कभी राह में उद्यान देख प्रसन्न हो जाता हूँ,
मैं रुकता नहीं, बस चलता जाता हूँ।

कभी अंधकार का अंत नहीं पाता हूँ,
परंतु उजाले की आस में कदम आगे बढ़ाता हूँ,
मैं रुकता नहीं बस चलता जाता हूँ।

कभी कुछ दूर चलने के लिए साथी मिल जाते हैं,
कभी अकेलेपन को ही अपना साथी बनाता हूँ,
मैं रुकता नहीं बस चलता जाता हूँ।

कभी पथ के कांटों पर डगमगाता हूँ,
कभी फूलों की महकती चादर पर इतराता हूँ,
मैं रुकता नहीं बस चलता जाता हूँ।

कभी रिमझिम बारिश का आनंद उठाता हूँ,
कभी धूप में वृक्ष की छाया में पनाह पाता हूँ,
मैं रुकता नहीं बस चलता जाता हूँ।

कोई अंत नहीं दिखता इस पथ का,
मन चाहिए मंजिल की आस में चला जाता हूँ,
मैं साधारण सा पथिक हूँ।

इस जीवन पथ पर रुकता नहीं,
बस चलता जाता हूँ।

— मनीष बोकोलिया

उप प्रबंधक (कार्यनीति योजना)

कौशांबी



कविता

फूलों से कुछ रंग चुराया

तितली से इन पंखों में फिर रंग सुनहरा भर लिया,
फूलों से कुछ रंग चुराया नाम अपना लिख लिया,
जब तलक है सांस मुझमें एक भी आँसू न दूँ,
हाथ थामे जिंदगी से एक वादा कर लिया।

सारी खुशबू मुझमें सिमटी मैं महकती इत्र सी,
मुस्कुराते गुलाब को आँचल में अपने रख लिया,
पाँव में बांधे ये पायल है छनकती जा रही,
जिंदगी का रूप मैंने इस तरह कुछ गढ़ लिया।

रोके से अब न रुके बढ़ती ही आगे जा रही,
काँपते कदमों को हमने आग पर जो रख लिया,
तितली से इन पंखों में फिर रंग सुनहरा भर
लिया।

— अर्चना पाण्डेय
सुपुत्री श्री अनिल कुमार पाण्डेय
उप अधिकारी(कार्यालय प्रशासन),
एनसीआर कौशांबी

कविता

कोई हुनर कहीं है मुझमें भी

एक दिन यूँ ही बैठे-बैटे,
एक कलम उठा ली मैंने भी,
थी बिसराई बात पते की,
कोई हुनर कहीं है मुझमें भी।

यूँ ही नहीं आई हूँ यहाँ तक,
पग-पग पर पत्थर आए,
ठान ली हमने जब चलने की,
कदम-कदम डटकर आए।

तालियों से आप सराहें,
तो कोई बात है आखिर मुझमें भी,
थी बिसराई बात पते की,
कोई हुनर कहीं है मुझमें भी।

ना जानू मैं शब्द क्या बेहतर,
न ही इतना ज्ञान है,
टूटे-फूटे शब्दों से भी,
मिला बहुत सम्मान है।

एक शीप के जैसी हूँ बस,
एक मोती है मुझमें भी,
थी बिसराई बात पते की,
कोई हुनर कहीं है मुझमें भी।

— अर्चना पाण्डेय
सुपुत्री श्री अनिल कुमार पाण्डेय
उप अधिकारी(कार्यालय प्रशासन),
एनसीआर कौशांबी

कविता

कोरोना की महामारी

हिंदु मुस्लिम सिख ईसाई,
दुआएं कर रहे हैं खूब ।
चारों ओर फैला है सन्नाटा,
दहशत मचा रही है शोर ॥

देख रहा कोई समाचार,
कोई पढ़ रहा है अखबार ।
कोरोना के कहर से,
ठप्प हो गया कारोबार ॥

सुनसान पड़ गई,
गलियां सड़कें और शहर ।
शीतलता का रसपान कराने वाली,
हवाओं में घुल गया जहर ॥

वह जो शहरों के हो चुके थे,
लौट आए अपने घर द्वार ।
बूढ़े मां बाप के संग,
पूरा हो गया उनका परिवार ॥

चाहरदीवारी की छत ही,
लगती है अब आसमान ।
पिंजरे में कैद पंछी सा,
लगता है अब इंसान ॥

पशु पक्षी अब स्वतंत्र हैं,
उनकी हर गलती है माफ ।
मानव तू है पिंजरे में कैद,
तुझे बेजुबानों की निर्मम हत्या का लगा ये श्राप है ॥

— राजपाल आर्य
सुरक्षा विभाग, कोटेश्वर

कविता

पेड़

वह पेड़ था,
अनम्य था,
गाँव की जरूरत था ।

एक और जरूरत आन पड़ी,
गाँव को सड़क की,
कत्ल उसे कर दिया,
गलत या सही किया ।

उसने कभी कुछ माँगा नहीं,
फल दिया और छांव दी,
बच्चों को सावन झुला दिया,
औरतों को ईंधन लकड़ी दी,
बस एक गलती उससे हुई,
रास्ते में आ गया ।

पर वह दृढ़ था तुम नहीं

सड़क का रास्ता बदलते,
जरूरत होती पुल बनाते,
पेड़ को तुम चौक बनाते,
लोग सुस्ताते आते जाते,
टीन शेड की जरूरत नहीं पड़ती,
उसको गाँव का बसस्टॉप बनाते ।

रास्ते हजार थे,
स्वार्थ ने तुमको ढक लिया,
अपने थोड़े से फायदे के लिए,
तुमने एक कत्ल किया,
वह मूक था कुछ बोला नहीं,
जब तुमने उसका अंत किया ।

वह पेड़ था,
अनम्य था,
गाँव की जरूरत था ।

— राघवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव (उप प्रबंधक)
एमपीएस विभाग, ऋषिकेश



कविता

गुस्ताखियां

हम भी करते रहे हैं गुस्ताखियां, जरा सी वो भी करें गुस्ताखियां,
रहता है इंतजार हमें, कभी तो वो भी करें गुस्ताखियां ।
मेरी राह मरुस्थल की गर्म रेत में ही सही, वो चाहें समंदर की ठंडी रेत पर चले,
चला जा रहा हूँ मैं ही अकेला, कभी साथ मेरे वो भी चलें,
हम बह गये दरिया में बिना पतवार के, वो पतवार संग कश्ती में ही बहें,
लगाता हूँ कितनी तरकीबें मिलने की, वो चाहे तो अकस्मात ही मिलें,
मैं ही कहता जा रहा हूँ, कभी वो भी हौले से कुछ तो कहें,
जरूरी है क्या इश्क भी हम करें, और हम ही सहे !!

— अरविंद गर्ग

उप महाप्रबंधक (एमपीएस), ऋषिकेश

कविता

मास्क मुआं

हँसती हैं आँखें सदा दिल तो मुस्कुराता है,
जिंदगी को मास्क मुआं छुपा कहाँ पाता है ।
हृदय की धड़कन और सांसों की सरगम को,
अवरोध देता भले पर दबा कहाँ पाता है ।
आँखों को भेदता तो कानों को बीधता वो,
इसका शोध उसका बोध जता कहाँ पाता है ।
मुख में खोये शब्दों और कानों के अर्थों को,
जान अगर ले भी तो बता कहाँ पाता है ।
हाथ की लकीरों सी चेहरे पे लकीरें वो,
उकेरता रहता मगर मिटा कहाँ पाता है ।
चेतना के अंकों को जड़ता के बीजों से,
जोड़ अगर ले भी तो घटा कहाँ पाता है ।

— ऋतेश शर्मा

वरि. अभियंता (ओ.एम.एस.), ऋषिकेश

कविता

एक दिन ऐसा भी आएगा

मैंने नहीं सोचा बचपन में, इक दिन ऐसा आएगा ।
 लकड़ी को किया किनारे, गैस का खाना खायेगा ॥
 पीतल, तांबा और था काँसा, आज नहीं वो बर्तन हैं ।
 विद्युत उपकरण यहां वहां, रखते प्लास्टिक बर्तन हैं ॥
 कूकर की सीटी जहां-तहां, घर-घर ओवन होगी ।
 मैंने नहीं सोचा बचपन में, इक दिन ऐसा आएगा ॥
 जिस पथ पैदल चलते थे हम, आज वहां वाहन चलते हैं ।
 जिस खेत में पीला सरसों था, आज वहाँ उद्योग चलते हैं ॥
 जहां-जहां पैदल पथ होते, आज सर्वत्र सड़कें न्यारी हैं ।
 लकड़ी, पत्थर का आगार कहां, सरिया ईंट की क्यारी हैं ॥
 मैंने नहीं सोचा बचपन में, इक दिन ऐसा आएगा ।
 ऑफिस का अनुमोदन कोई, ई-पेपर हो जायेगा ॥
 विविध भारती, आल इंडिया, क्रिकेट मैच सुना करते थे ।
 संदेश भेजने दूर-दूर, टेलीग्राम किया करते थे ॥
 आज घर में टीवी, लेपटॉप, हर हाथ मोबाइल रहता है ।
 ऑफिस की मीटिंग, वी सी, सब टीम, मीट हो जाता है ॥
 मैंने नहीं सोचा बचपन में, इक दिन ऐसा आएगा ।
 ऑफिस का सारा कार्य, घर में ही कर डालेगा ॥
 संस्कारों में रहकर सारे, फिर से पूजा पाठ करेंगे ।
 खर्च सारे बचे रहेंगे, प्रीति से सब मिले रहेंगे ॥
 जंगल सारे बचे रहेंगे, हिमालय भी दिख पाएंगे ।

स्वच्छ चाँदनी बिछी रहेगी, तारे सब दिख पाएंगे ॥
 चौकीदार तापमान मापेगा, तब घर में घुस पाएंगे ।
 घर में आकर कपड़े नित्य, वाशिंग मशीन में डालेंगे ॥
 जिस यमुना को साफ करने में, सरकार ने बड़ा बजट बनाया ।
 उस यमुना को लॉकडाउन ने, दो महीने में निर्मल बनाया ॥
 घर के काम में हाथ बटाकर, नाई का काम स्वयं करेंगे ।
 दो तीन बार स्नान करेंगे, आयुर्वेद का सेवन करेंगे ॥
 मैंने नहीं सोचा बचपन में, इक दिन ऐसा आएगा ।
 ताजी हवा वातावरण में, हर चेहरे में मास्क रहेगा ॥
 दुख-सुख में शामिल होने को, सीमा तय कर डालेगा ।
 खाना-पीना सादा होगा, पार्टी से कतराएगा ॥
 मंदिर, मस्जिद बंद रहेंगे, बंद रहेंगे तरणताल ।
 व्यायामशाला ठप पड़ेगी, बंद रहेंगे पिक्चर हाल ॥
 जिनके ख्वाब हुआ करते थे, कि विदेश में जाँब करेंगे ।
 अब कोई ना बोल रहा है, देश विदेश की सैर करेंगे ॥
 मैंने नहीं सोचा बचपन में, इक दिन ऐसा आएगा ।
 कोरोना की महामारी से, इन्सा घर में बन्द रहेगा ॥

— हरीश चंद्र उपाध्याय

वरि. प्रबंधक(भू विज्ञान एवं भू तकनीकी), ऋषिकेश

राजभाषा गतिविधियां एवं आयोजित कार्यक्रम

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में दिनांक 19.06.2020 को हिंदी नोडल अधिकारियों की बैठक एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया। बैठक एवं कार्यशाला की अध्यक्षता श्री ईश्वर दत्त तिग्गा, उप महाप्रबंधक (कार्मिक-स्थापना/हिंदी) ने की। इस अवसर पर श्री ईश्वर दत्त तिग्गा ने अपने संबोधन में कहा कि कोरोनावायरस महामारी लंबे समय तक रहेगी और यह हमारे जीवन का एक अंग बनने जा रही है। हमें इसके साथ जीने की आदत डालनी है तथा अपनी गतिविधियों में निरंतरता बनाकर रखनी होगी।

वरि.हिंदी अधिकारी, श्री पंकज कुमार शर्मा ने बताया कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली के द्वारा 28 मई को ऑन-लाइन बैठकों के संबंध में परिचर्चा का आयोजन वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया। जिसमें श्री संदीप आर्य, निदेशक (कार्या.), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार एवं श्री अजय मलिक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गाजियाबाद भी उपस्थित थे। परिचर्चा में कहा गया कि कोरोनावायरस संक्रमण की स्थिति सामान्य होने तक राजभाषा हिंदी से संबंधित अधिकांश बैठकें एवं राजभाषा से संबंधित कार्यक्रम ऑन-लाइन प्लेटफार्मों के माध्यम से आयोजित किए जाएं। ऑन-लाइन प्लेटफार्मों में आजकल गूगल मीट, वेबएक्स जैसे कई टूल हैं जिनके माध्यम से उक्त कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं।

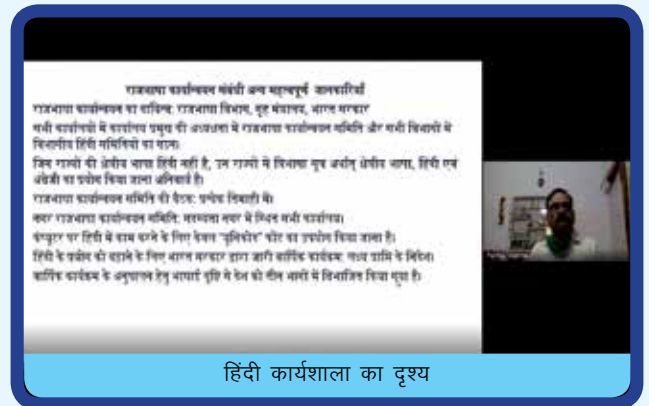
कार्यशाला में टीएचडीसी इंडिया लि. के वरि.प्रबंधक (हिंदी), श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा राजभाषा के प्रगामी



कार्यशाला का संचालन करते वरि. हिंदी अधिकारी, पंकज कुमार शर्मा

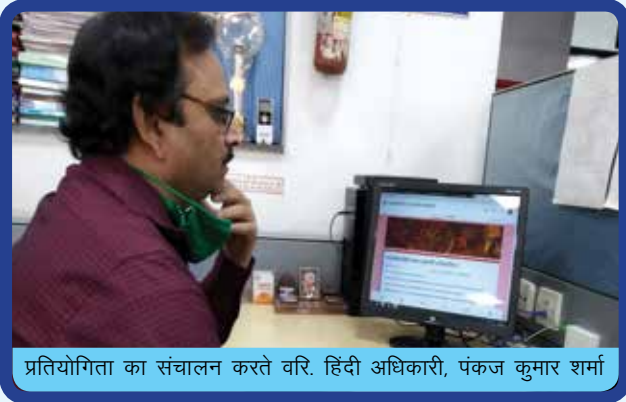
प्रयोग के लिए जारी वर्ष 2020-21 के वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों के संबंध में प्रतिभागियों को जानकारी दी।

वरि. हिंदी अधिकारी, श्री पंकज कुमार शर्मा ने विभागों/अनुभागों से प्राप्त हुई 31 मार्च, 2020 को समाप्त तिमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा की। श्री शर्मा ने उक्त तिमाही रिपोर्टों में दिए गए बिंदुओं पर स्पष्टीकरण भी दिए तथा राजभाषा नियम, 1976 में किए गए प्रावधानों के बारे में भी जानकारी दी। कार्यशाला में 20 अधिकारियों ने प्रतिभागिता की।



हिंदी कार्यशाला का दृश्य

कारपोरेट कार्यालय के कर्मचारियों के लिए राजभाषा/हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन



प्रतियोगिता का संचालन करते वरि. हिंदी अधिकारी, पंकज कुमार शर्मा

कोरोनावायरस वैश्विक महामारी के कारण निगम के कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए वित्तीय वर्ष 2020 की प्रथम तिमाही में आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिता 08 जून, 2020 को ऑन-लाइन आयोजित की गई।

प्रतियोगिता के आयोजन के लिए राजभाषा/सामान्य हिंदी/कार्यालयीन हिंदी पर बहुविकल्पीय उत्तरों के साथ गूगल फॉर्म के माध्यम से प्रश्न-पत्र तैयार किया गया था। जिसमें राजभाषा, सामान्य हिंदी, टिप्पणियों

एवं हिंदी शब्दों के अंग्रेजी पर्याय एवं अंग्रेजी शब्दों के हिंदी पर्याय से संबंधित प्रश्न पूछे गए थे।

प्रतियोगिता की लिंक आयोजन के दिन सभी प्रतिभागी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की ई-मेल आईडी एवं व्हाट्सएप ग्रुप पर भेजी गई। प्रतियोगिता की समय-सीमा आधा घंटा निश्चित की गई थी। इस प्रतियोगिता में 48 अधिकारियों/कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की। प्रतिभागिता करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को ऑटोमेटेड मेल के माध्यम से प्रतियोगिता संपन्न होने के बाद प्रश्नों के सही उत्तर एवं उनके द्वारा प्राप्त स्कोर प्राप्त हुआ।

प्रतियोगिता में श्री शिवराज चौहान, वरि.प्रबंधक ने प्रथम, श्री संतोष प्रसाद घिल्डियाल, उप प्रबंधक ने द्वितीय, श्री आनंद कुमार अग्रवाल, वरि. प्रबंधक ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। श्रीमती रश्मि बड़ोनी, उप प्रबंधक एवं श्री एस.डी.बसलियाल, प्रबंधक ने सात्वना पुरस्कार प्राप्त किया।



प्रतियोगिता में प्रतिभागिता करते अधिकारी/कर्मचारी



टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता का आयोजन

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कोटेश्वर यूनिट कार्यालय में दिनांक 26.06.2020 को कर्मचारियों के लिए टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के आयोजन में सोशल डिस्टेंसिंग का ध्यान रखा गया एवं कर्मचारियों के मध्य पर्याप्त दूरी रखी गई।



समन्वयकर्ता सम्मेलन का आयोजन



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के राजभाषा अधिकारियों / हिंदी समन्वयकर्ताओं के लिए नराकास, सचिवालय द्वारा दिनांक 15.07.2020 को पूर्वाह्न 11:15 बजे "हिंदी समन्वयकर्ता/वेब संगोष्ठी" का आयोजन वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से ऑनलाइन किया गया। सम्मेलन में 28 सदस्य संस्थानों के 46 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री ईश्वरदत्त तिग्गा, उप महाप्रबंधक (कार्मिक-स्थापना/हिंदी) ने की। इस अवसर पर नराकास, हरिद्वार के सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा, वरि.हिंदी अधिकारी ने अध्यक्ष महोदय एवं सदस्य संस्थानों के सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया।

सम्मेलन की कार्यवाही आगे बढ़ाते हुए श्री शर्मा ने सदस्य संस्थानों के प्रतिभागियों को नराकास की पिछली छह बैठकों में कार्यालय प्रमुखों की उपस्थिति, अर्धवार्षिक रिपोर्ट प्राप्त होने की स्थिति, राजभाषा विभाग को ऑन-लाइन तिमाही रिपोर्ट भरकर भेजने की स्थिति से अवगत कराया। इसके साथ ही उन्होंने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा वर्तमान परिस्थितियों में लिए गए कुछ महत्वपूर्ण निर्णयों से भी अवगत कराया तथा नराकास, हरिद्वार के इस छमाही के लक्ष्यों को पूरा करने संबंधी तथा भावी कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम के माननीय अध्यक्ष, श्री तिग्गा ने अपने संबोधन में कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में सोशल गैदरिंग करना उचित नहीं है। इसलिए वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से ऐसे आयोजन निरंतर करते रहना चाहिए ताकि नराकास की गतिविधियों में निरंतरता बनी रहे एवं राष्ट्रीय महत्व के इस अभियान में कोई रुकावट न आए।



सदस्य संस्थानों के प्रतिनिधियों को संबोधित करते श्री ईश्वरदत्त तिग्गा, उप महाप्रबंधक (कार्मिक-स्थापना/हिंदी)



सदस्य संस्थानों के प्रतिनिधियों को संबोधित करते नराकास, हरिद्वार के सचिव श्री पंकज कुमार शर्मा

नराकास, हरिद्वार की 30वीं अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन



सदस्य संस्थानों के प्रतिनिधियों को संबोधित करते नराकास के माननीय अध्यक्ष एवं टीएचडीसी इंडिया लि. के निदेशक (कार्मिक), श्री विजय गोयल



सदस्य संस्थानों के प्रतिनिधियों को संबोधित करते भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-2 के उप निदेशक (कार्यान्वयन), श्री अजय मलिक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार की 30वीं अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन दिनांक 04 अगस्त, 2020 को पूर्वाह्न 11:00 बजे ऑनलाइन किया गया। इस अवसर पर नराकास, हरिद्वार के अध्यक्ष एवं टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के निदेशक (कार्मिक), श्री विजय गोयल, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-2 के उपनिदेशक (कार्यान्वयन), श्री अजय मलिक एवं नराकास के सदस्य संस्थानों के प्रमुखों एवं प्रतिनिधियों ने ऑन-लाइन बैठक में भाग लिया। इस अवसर पर नराकास हरिद्वार के 42 संस्थानों के प्रमुखों/प्रतिनिधियों ने बैठक में उपस्थिति दर्ज की। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति में केंद्र सरकार के नियंत्रणाधीन सभी मंत्रालय, विभाग, संस्थान, उपक्रम, बैंक, बीमा कंपनी, स्वायत्तशासी संस्थान एवं निकाय इसके सदस्य होते हैं।

सर्वप्रथम श्री ईश्वर दत्त तिग्गा, उप महाप्रबंधक (कार्मिक-स्थापना/हिंदी) ने सभी उपस्थित प्रमुख अतिथियों एवं संस्थानों के प्रमुखों एवं प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए अपना संबोधन प्रस्तुत किया। इसके बाद नराकास, हरिद्वार के सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा ने बैठक में अध्यक्ष महोदय से अनुमति प्राप्त कर नराकास, हरिद्वार की पिछली छमाही एवं भावी छमाही के कार्यलक्ष्यों के बारे में अवगत कराया तथा उन्होंने सदस्य संस्थानों से प्राप्त हुई अर्धवार्षिक रिपोर्टों की समीक्षा की। इस अवसर पर उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा जारी नवीनतम दिशा-निर्देशों से भी अवगत कराया।



बैठक का संचालन करते नराकास, हरिद्वार सचिवालय के अधिकारीगण

उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-2, राजभाषा विभाग के उप निदेशक (कार्यान्वयन), श्री अजय मलिक ने नराकास के अध्यक्षीय कार्यालय के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि यह नराकास बड़ी नराकास है और काफी लंबे समय से सदस्य संस्थानों के मध्य राजभाषा कार्यान्वयन के लिए अथक प्रयास कर रही है और वर्तमान परिस्थितियों में भी ऑनलाइन बैठक का आयोजन बहुत अच्छे तरीके से किया। उन्होंने राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3), राजभाषा नियम-5, राजभाषा नियम-3 आदि के बारे में सदस्य संस्थानों का विस्तार से मार्गदर्शन किया। इसके साथ ही उन्होंने संस्थान प्रमुखों से राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित प्रत्येक विषय को गंभीरता से लेने का आह्वान किया।

नराकास के माननीय अध्यक्ष एवं टीएचडीसी इंडिया लि. के निदेशक (कार्मिक), श्री विजय गोयल ने अपने संबोधन में कहा कि इस समय पूरा विश्व कोविड-19 महामारी से जूझ रहा है तथा हमारा देश भी इसके संक्रमण से अछूता नहीं है। वर्तमान परिस्थितियों में सोशल डिस्टेंसिंग रखना आवश्यक हो गया है परंतु आधुनिक संचार प्रणाली की मौजूदा सुदृढ़ स्थिति के साथ व्यावसायिक एवं वाणिज्यिक गतिविधियां पुनः सक्रिय हो रही हैं। उन्होंने राजभाषा विभाग की आधुनिक संचार प्रणाली का उपयोग कर राजभाषा कार्यान्वयन की गति बनाए रखने की पहल का स्वागत किया। उन्होंने यह भी कहा कि राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार सितंबर माह में प्रत्येक सदस्य संस्थान हिंदी दिवस/हिंदी सप्ताह/हिंदी पखवाड़ा/माह का आयोजन उत्साहपूर्वक करे। उन्होंने राय दी कि सभी सदस्य संस्थान हिंदी दिवस से संबंधित वॉलपेपर बनाकर अपने संस्थान के कम्प्यूटरों में डेस्कटॉप पर लगाएं। नराकास सचिवालय भी इस प्रकार का वालपेपर सभी संस्थानों को परिचालित करेगा जिसका उपयोग भी इस प्रयोजन से किया जा सकता है। उन्होंने सभी कार्यालय प्रमुखों/प्रतिनिधियों एवं बैठक में उपस्थित सभी कर्मचारियों के उत्तम स्वास्थ्य की कामना की।



हास-परिहास



एक लड़के की दुखभरी कहानी...जिन घरवालों को मैं बचपन में सोता हुआ प्यारा लगता था...

आज वही घरवाले सोता हुआ देखकर, मुझे लात मारकर उठाते हैं...!!!

आपको पता है ? केवल मादा मच्छर ही खून चूस सकती है, नर मच्छर केवल आवाज करते हैं !

धन्य हो प्रभु ! आपका सिस्टम हर जगह सेम है !

पप्पू – पापा, कल हम मालामाल हो जाएंगे!

पापा – अच्छा... वो कैसे ?

पप्पू – कल हमारे गणित के टीचर पैसे को रुपए में बदलना सिखाएंगे...!!!

लड़की – मेरे पापा ने मुझे नया मोबाइल खरीद कर दिया।

लड़का – अरे वाह, कौन सी कंपनी का ??

लड़की – लावारिस !!!

लड़का – अरे अक्ल की अंधी, वो लावारिस नहीं लावा आईरिश है।

जीवन में कम से कम एक सच्चा मित्र हमेशा अपने पास रखो। ताकि जिस दिन आपके यहां तुरई, करेला या लौकी की सब्जी बने, उस दिन उसके घर जाकर खाना खा सको !!!

पप्पू अपनी गर्लफ्रेंड को लेकर होटल में डिनर कराने गया।

पप्पू – बोलो बेबी, क्या मंगारू ?

गर्लफ्रेंड – मेरे लिए तो पिज्जा मंगा लो और अपने लिए एंबुलेंस !

पप्पू – अरे एंबुलेंस क्यों ?

गर्लफ्रेंड – पीछे देखो तुम्हारी बीवी खड़ी है !!!

बैंक मैनेजर – कैश खत्म हो गया है, कल आना,

पप्पू – लेकिन मुझे मेरे पैसे अभी चाहिए,

मैनेजर – देखिए, आप गुस्सा मत करिये, शांति से बात कीजिए,

पप्पू – ठीक है बुलाओ शांति को, आज उसी से बात करूंगा !!!

जज– तुमने पुलिस ऑफिसर की जेब में माचिस की जलती हुई तीली क्यों रखी ??

पप्पू – उसने ही कहा था, जमानत करवानी है तो पहले जेब गर्म करो!!

पप्पू स्कूल में गधा लेकर आया।

अध्यापिका – ये गधा क्यों लेकर आये हो ?

पप्पू – मिस.....आप ही तो कहती हैं कि मैंने बड़े-बड़े गधों को इंसान बनाया है तो मैंने सोचा कि इसका भी भला हो जाए।

बंटी – ओए तूने अपनी सगाई क्यों तोड़ दी ?

पप्पू – अरे यार, उसका कोई बॉयफ्रेंड नहीं था।

बंटी – तो ?

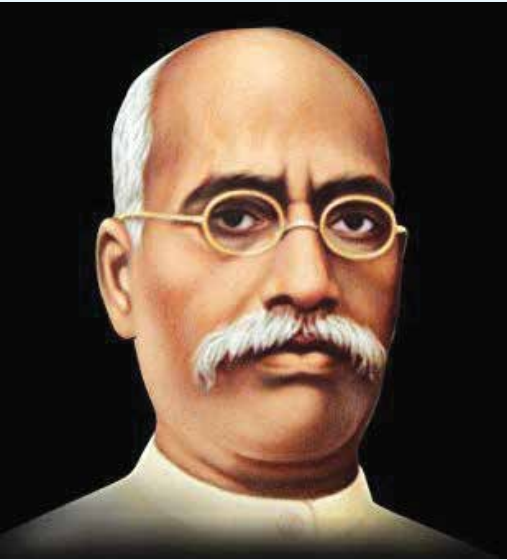
पप्पू – जो आज तक किसी की ना हो सकी..वो मेरी क्या होगी ?

गुंडा – चल "हपता" निकाल,

पप्पू – "कैलेंडर फाड़ते हुए"

ले भाई पूरा "महीना" ही रख ले !!

देवकीनंदन खत्री



देवकीनंदन खत्री का जन्म 18 जून, 1861 को पूसा, मुजफ्फरपुर, बिहार में हुआ था। उनके पिता का नाम लाला ईश्वरदास था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उर्दू-फारसी में हुई थी। बाद में उन्होंने हिंदी, संस्कृत एवं अंग्रेजी का भी अध्ययन किया। उन्होंने वाराणसी में एक प्रिंटिस प्रेस की स्थापना की और वर्ष 1883 में हिंदी मासिक "सुदर्शन" की शुरुआत की। उनका निधन 01 अगस्त, 1913 को हुआ था।

बाबू देवकीनंदन खत्री ने जब उपन्यास लिखना शुरू किया उस जमाने में अधिकतर उर्दू का ही प्रयोग होता था। ऐसी परिस्थिति में खत्री जी ने ऐसी रचना करने का लक्ष्य रखा,

जिससे कि देवनागरी हिंदी का प्रचार-प्रसार हो। चंद्रकांता उपन्यास इतना लोकप्रिय हुआ कि जो लोग हिंदी लिखना-पढ़ना नहीं जानते थे या उर्दू का उपयोग करते थे, उन्होंने केवल इस उपन्यास को पढ़ने के लिए हिंदी सीखी। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने चंद्रकांता संतति लिखी, जो चंद्रकांता की अपेक्षा कई गुणा रोचक था।

इन उपन्यासों को पढ़ते वक्त लोग खाना-पीना तक भूल जाते थे। इन उपन्यासों की भाषा इतनी सरल थी कि इन्हें पांचवी कक्षा के छात्र भी पढ़ लेते हैं। इन दो उपन्यासों में लगभग 2000 पृष्ठ हैं, लेकिन एक भी क्षण ऐसा नहीं आता, जहां पाठक ऊब जाएं।

इनके अन्य उपन्यास— चंद्रकांता संतति, काजर की कोठरी, नरेंद्र-मोहिनी, कुसुम कुमारी, वीरेंद्र वीर, गुप्त गोंडा, कटोरा भर, भूतनाथ जैसी कृतियां काफी चर्चित रहीं।





**हम सबके पास बराबर प्रतिभा
भले ही न हो परंतु अपनी
प्रतिभाओं को विकसित करने का
बराबर मौका होता है !**

**All of us do not have equal
talent, but, all of us have equal
opportunity to develop our
talent.**

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम



**टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED**

(भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार का संयुक्त उपक्रम)

गंगा भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड, ऋषिकेश-249201 (उत्तराखंड)

दूरभाष: 0135-2473614, वेबसाइट: <http://www.thdc.co.in>

पंकज कुमार शर्मा, वरि. हिंदी अधिकारी द्वारा
टीएचडीसीआईएल के लिए प्रकाशित

(निःशुल्क आंतरिक वितरण के लिए)